संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ फरवरी २०१५
वर्ष : २४ अंक : ८
(निरंतर अंक : २६६)

दर्शन के लिए उमड़ा जनसैलाब

पृष्ठ ६

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

"आज तक जो भी मेरे ऊपर आरोप लगे हैं, सब-के-सब फर्जी निकले और यह केस भी फर्जी ही है, फर्जी निकलेगा। मेरा परमात्मा पर भरोसा है, न्यायपालिका पर भी भरोसा है।"
- पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

"७६ साल की उम्र में पूज्य बापूजी को गलत तरीके से फँसाकर प्रताड़ित किया जा रहा है। साजिश के बावजूद देश में संतों के प्रति श्रद्धा में कोई कमी नहीं आयी है। बापूजी को बहुत कष्ट दिया गया है। उन्हें जमानत मिलनी चाहिए।"
- श्री अशोक सिंहलजी

मुख्य संरक्षक व पूर्व अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद (पृष्ठ १५)

मीडिया ट्रायल्स से बनता है कोर्ट पर दबाव

- कर्मयोगी श्री अरुण जेटली पृष्ठ १०

हमें बच्चों को यह संस्कार देना है

- कर्मयोगी श्री राजनाथ सिंह पृष्ठ १०

संस्कृतप्रेमी राजा भोज पृष्ठ ११

आश्रम संचालित 'युवा सेवा संघ' के युवकों ने संयम-सदाचार का संदेश समाज तक पहुँचाकर एवं गरीबों की सेवा करके मनाया युवा दिवस

चांदूर बाजार, जि. अमरावती (महा.) | नंदिनीनगर (छ.ग.) | प्रयागराज (उ.प्र.) | रायपुर (छ.ग.)

आगरा | इगलास (उ.प्र.) | इंदौर | रजोकरी-दिल्ली

सायन-मुंबई | टीकमगढ़ (म.प्र.) | मैनपुरी (उ.प्र.) | पानीपत (हरि.)

समाज में सात्त्विकता एवं जागृति का संचार करतीं प्रभातफेरियाँ व संकीर्तन यात्राएँ

लुधियाना (पंजाब) | वृंदावन (उ.प्र.) | इंदौर | कोलकाता

ग्वालियर (म.प्र.) | पिपरौद-रायपुर (छ.ग.) | गाजियाबाद | बाड़मेर (राज.)

बड़ौदा | रुद्रपुर (उत्तराखंड) | रेवाड़ी (हरि.) | सागर (म.प्र.)

भुवनेश्वर | देवास (म.प्र.) | भिलाई, जि. दुर्ग (छ.ग.) | जोधपुर

सेवा एवं आत्मोन्नति में सहायक ज्योत से ज्योत जगाओ सम्मेलन

हैदराबाद | यमुनानगर (हरि.) | बेंगलुरु | नादौन (हि.प्र.) | मुजफ्फरपुर (बिहार)

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २४ अंक : ८
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २६६)
प्रकाशन दिनांक : १ फरवरी २०१५
मूल्य : ₹ ६
माघ-फाल्गुन वि.सं. २०७१

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफैक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में
(१) वार्षिक : ₹ ६०/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ १००/-
(३) पंचवार्षिक : ₹ २२५/-
(४) आजीवन : ₹ ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)
(१) वार्षिक : ₹ ३००/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६००/-
(३) पंचवार्षिक : ₹ १५००/-

अन्य देशों में
(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क
'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site: www.rishiprasad.org
www. ashram.org

ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ

हमारे साधक गुमराह होनेवाले नहीं हैं

- पूज्य बापूजी

महापुरुषों का संग आदरपूर्वक, प्रयत्नपूर्वक करना चाहिए और उनकी बात को आत्मसात् करना चाहिए। इसीमें हमारा कल्याण है। बाकी तो सत्पुरुष धरती पर आते हैं तो उनके प्रवचनों को, उनके व्यवहार को अथवा उनकी बातों को तोड़-मरोड़ के विकृत करके पेश कर कुप्रचार करनेवाले लोग भी होते हैं। वसिष्ठजी महाराज का कुप्रचार ऐसा हुआ कि उन्हें कहना पड़ा : ''हे रामजी ! मैं हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि जो कुछ मैं तुमको उपदेश करता हूँ, उसमें ऐसी आस्तिक भावना कीजियेगा कि इन वचनों से मेरा कल्याण होगा।''

कितने ऊँचे महापुरुष ! सीतासहित भगवान रामचन्द्रजी थाल में उनके चरण धोकर चरणामृत लेते थे और श्रद्धा डिगे ऐसे रामजी नहीं थे यह वसिष्ठजी जानते हैं लेकिन इस निमित्त, जो शास्त्र और संत का फायदा लेकर आम आदमी उन्नत होंगे, उन बेचारों को पतन करानेवाले लोग गिरा न दें इसलिए वे महापुरुष हाथ जोड़ रहे हैं।

धर्मांतरण करनेवालों ने देखा कि बापूजी लोगों को सावधान करते हैं तो उन्होंने एक अभियान चला लिया है। ऐसा एक-दो बार नहीं, कई बार हुआ है। दो-पाँच आदमी मिल गये, कुछ मीडियावाले मिल गये और कुप्रचार करते रहे। हम बोलते थे, 'ठीक है, करने दो। होने दो जो होता है।' हम तो सह लेते हैं। लेकिन हमारे साधकों का अनुभव है कि 'हमारे बापू ऐसे नहीं हैं। तुम्हारा कुप्रचार एक तरफ है और हमारा लाखों-अरबों रुपयों से भी कीमती जीवन, हमारा अनुभव हमारे पास है। बापू के दर्शन-सत्संग से हमारे जीवन में परिवर्तन आये हैं, हम जानते हैं।' कोई पैसे देकर हमारे लिए (बापूजी के लिए) कुछ चलवा दे तो हमारे साधक गुमराह होनेवाले नहीं हैं।

उन चैनलवालों को धन्यवाद है जो...

कितना भी अच्छा काम करो फिर भी किसीकी कुछ खुशामद न करो तो कुछ-का-कुछ मीडिया में दिखायेंगे, अखबारों में लिखवा देंगे, ऐसी ईर्ष्यावाले लोग भी हैं। हम तो कहते हैं कि

जिसने दिया दर्दे-दिल, उसका खुदा भला करे...

सैकड़ों जगहों पर जपयज्ञ चल रहे हैं, उन सज्जनों को यह दिखाने का समय नहीं मिलता। जो मोहताज हैं, गरीब, लाचार, बेरोजगार हैं, ऐसे लोग आश्रमों में, आश्रम की समितियों के केन्द्रों पर सुबह ९ से १० बजे तक इकट्ठे हो जाते हैं और १२ बजे तक कीर्तन-भजन करते हैं, फिर भोजन मिलता है, थोड़ा आराम करके भजन करते हैं और शाम को ५० रुपये लेकर जाते हैं। ओड़िशा, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश तथा और भी कई राज्यों में ऐसे जपयज्ञ चलते हैं और अहमदाबाद आश्रम की तरफ से उनको धनराशि भेजते हैं, अपने पास रिकॉर्ड है।

प्रसार-माध्यमों का यह नैतिक कर्तव्य है कि यह समाज को दिखायें। जैसे कुछ चैनलवाले हैं, उनको धन्यवाद है कि सत्संग और ये अच्छाइयाँ दिखाने का सौभाग्य है उनका, तो उनके लिए लोगों में इज्जत भी बढ़ जाती है, उन चैनलों के लिए सम्मान भी हो जाता है।

हिन्दुस्तान के लगभग सभी संत-महापुरुषों का आजकल खूब जमकर कुप्रचार हो रहा है परंतु सच्चा संत भारत की शान-बान को सँभालने के लिए तैयार रहता है । किसी संत के प्रति कोई आरोप-प्रत्यारोप लगाना आजकल फैशन हो गया है । कुछ ऐसी विदेशी ताकतें हैं जो हिन्दुस्तान के संतों को बदनाम करने में भी खूब धन का उपयोग करती हैं। हिन्दू संस्कृति को मिटाओगे तो मानवता ही मिट जायेगी भैया !

परंतु हमें विश्वास है कि कैसा भी युग आ जाय, कलियुग या कलियुग का बाप आ जाय फिर भी सतयुग का अंश रहता है, सज्जनों का सत्त्व रहता है और अच्छे सज्जन लोग थोड़े-बहुत संगठित रहते हैं, तभी ऐसे कलियुग के तूफानभरे कुप्रचारों से समाज की रक्षा हो सकती है। विकृति फैलाना, भ्रामक प्रचार करना यह कोई कठिन काम नहीं है, सुख-शांति और समत्वयोग लाना यह बहादुरी का काम है। लड़ते-झगड़ते समाज में स्नेह का रस दान करना यह बड़ी बात है।

'विश्व धर्म संसद' में मैंने कहा था...

शिकागो की 'विश्व धर्म संसद' में (भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए) मैंने बार-बार इस बात पर ध्यान दिलाया था कि 'जातिवाद, वर्गवाद, फलानावाद... यह करके मनुष्य-मनुष्य को एक-दूसरे की नजरों से गिराना और भिड़ाना - इससे मानवता की सेवा नहीं होती, मानवता के साथ विश्वासघात होता है । मानवता की सेवा है कि मानव मानव के हित में लगे, मंगल में लगे, एक-दूसरे को समझे और आत्मीयता बढ़ाये। मेरी सभी से यह प्रार्थना है कि भले कोई किसी मजहब या धर्म को मानता है, किसी गुरु को मानता है लेकिन कुल मिलाकर है तो धरती का मनुष्य ! मनुष्य मनुष्य के हित में काम करे।'

तुम तैयार रहो !

मैं कभी किसी मजहब अथवा किसी धर्म को या किसी गुरु को माननेवाले की आलोचना करने में विश्वास नहीं रखता। मेरे सत्संग में ऐसा नहीं है कि केवल मेरे शिष्य ही आते हैं बल्कि कई सम्प्रदायों के, कई मजहबों के लोग आते हैं। मेरे कई मुसलमान भक्त हैं, ईसाई भक्त हैं। मेरे मन में ऐसा नहीं होता कि कोई पराया है।

सब तुम्हारे तुम सभीके, फासले दिल से हटा दो।

वसिष्ठजी और रामजी के जमाने में भी ऐसा-वैसा बोलनेवाले और अफवाहें फैलानेवाले लोग थे तो अभी मेरे कहने से सब चुप हो जायेंगे, सब शांत हो जायेंगे, ऐसा मैं कोई आग्रह नहीं रखता हूँ। फिर भी जो अच्छे हैं वे अच्छी बात मानकर स्वीकार कर लें तो उनकी मौज है, न मानें तो उनकी मौज है।

साधकों को यह भ्रामक प्रचार सुनकर घबराना नहीं चाहिए। जब प्रचार भ्रामक है तो उससे डरना काहे को ? घबराना काहे को ?

देव-दानव युद्ध अनादिकाल से चला आ रहा है। दैवी विचार व आसुरी विचार यह तो चलता रहता है। यह तो संसार है । महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, संत कबीरजी, गुरु नानकजी, भगवान रामजी और रामजी के गुरुदेव वसिष्ठजी पर ये भ्रामक प्रचार के तूफान और बादल आये तो तुम्हारे पर भी आ गये तो क्या बड़ी बात है ! तुम तैयार रहो।

उठत बैठत ओई उटाने,
कहत कबीर हम उसी ठिकाने ।

'शरीर मैं हूँ, यश-अपयश मेरा है' - यह मोह यानी अज्ञान है। 'मैं सच्चिदानंद ब्रह्म हूँ, सृष्टि के आदि में जो था और प्रलय के बाद भी जो रहेगा वही मैं हूँ।' - यह सत्य, वेदांतिक ज्ञान है।

जीव यदि ब्रह्म-परमात्मा को जान ले तो वह खुद ब्रह्ममय हो जाय और
८४ लाख उच्च-नीच योनियों से मुक्त हो जाता है ।

अद्भुत नजारे दिखे पूज्य बापूजी की दिल्ली यात्रा में

- नीलम दुबे, आश्रम की मीडिया प्रवक्ता

'मेरा संकल्प पूरा हुआ' - पूज्य बापूजी

''२०१४ में चला था और २०१५ में पहुँचा हूँ।'' - ये वचन थे पूज्य बापूजी के, जो पूज्यश्री ने १ जनवरी २०१५ को जोधपुर पुलिस को तिहाड़ जेल, दिल्ली में कहे। बापूजी ने आगे कहा : ''आप लोगों ने मेरे तिहाड़ जेल आने के संकल्प को पूरा कर दिया।''

(पूर्व में पूज्य बापूजी व्यासपीठ से बोले थेः ''मेरा संकल्प भगवान देर-सवेर फलीभूत कर देते हैं। मेरा तिहाड़ जेल जाने का संकल्प हो रहा है। क्या पता किस निमित्त से जाऊँगा ! ऐसे ही जाऊँ या सरकार कोई योजना कर दे।'')

१ जनवरी २०१५...

इस बार दिल्ली में १ जनवरी को कुछ अलग ही नजारा दिखा। जब बापूजी ने दिल्ली में दस्तक दी तो पूरी दिल्ली मानो थम-सी गयी थी। क्या मीडिया और क्या पुलिस, क्या प्रशासन और क्या जनता ! सबके मुख पर एक ही नाम था - 'संत आशारामजी बापू।' पूरा मीडिया ३१ दिसम्बर की रात से १ जनवरी की रात तक बापूजी के बारे में खबरें दिखाता रहा।

३१ दिसम्बर की रात को जब पूज्य बापूजी मंडोर एक्सप्रेस से दिल्ली जाने के लिए जोधपुर रेलवे स्टेशन पहुँचे तो पूरा स्टेशन श्रद्धालुओं से खचाखच भरा हुआ था। इतना ही नहीं, जोधपुर से दिल्ली के बीच जितने भी स्टेशनों पर गाड़ी रुकनी थी, उन सभी पर बापूजी की एक झलक पाने को लालायित लोगों की भारी भीड़ उपस्थित थी। पहले पूज्यश्री को दिल्ली कैंट में उतारे जाने की सूचना पुलिस ने दी थी परंतु वहाँ बापूजी के दर्शन के लिए आये श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखकर वहाँ बापूजी को नहीं उतारा गया।

१ जनवरी को सुबह ६.३० बजे जब मंडोर एक्सप्रेस पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँची तो वहाँ भी श्रद्धालुओं का अथाह सैलाब उमड़ा हुआ था। दिल्ली की जनवरी की कड़कड़ाती सर्दी में साधक अपने परिवारसहित भोर में ५ बजे ही आ गये थे। रेलगाड़ी के पहुँचते ही ''ॐ ॐ ॐ बापूजी जल्दी बाहर आयें।'' की पुकार एवं ''बापूजी निर्दोष हैं...'' के नारों से पूरा रेलवे स्टेशन गूँज उठा। पूज्य बापूजी लोगों को शांत रहने का इशारा कर रहे थे। गजब के हैं हमारे बापूजी ! बिना किसी कसूर के लगभग डेढ़ साल से जेल में हैं फिर भी अपनी

समता, धैर्य व शांति के द्वारा 'अविकम्प योग' का परिचय देते हुए लोगों को भी इन्हीं महान गुणों को धारण करने का संदेश दे रहे हैं। अनुशासन सीखना हो, न्यायपालिका का सम्मान करना सीखना हो तो उनमें भी बापूजी आदर्श हैं।

रेलवे स्टेशन से बापूजी को तिहाड़ जेल ले जाया गया। जेल के बाहर भी लोगों की भारी भीड़ थी। बापूजी वहाँ भी आत्मानंद की मस्ती में मस्त थे। पुलिसवाले ने कहा : ''इतनी तकलीफ में भी महाराजजी इतने प्रसन्न कैसे हैं!'' ब्रह्मज्ञानी महापुरुष पूज्य बापूजी की लीला आम इन्सान की समझ से परे है।

क्या हम किराये पर आये हैं ?

एम्स अस्पताल के आसपास भी लोगों की भारी भीड़ होने से बापूजी को 'एम्स ट्रॉमा सेंटर' ले जाया गया। यहाँ भी हजारों की संख्या में लोग पहले से ही मौजूद थे। वहाँ सभी लोग बापूजी से प्राप्त अपने अनुभवों को आपस में साझा कर रहे थे। मैं (नीलम दुबे) भी उन साधकों के अनुभव सुन रही थी, साथ ही लगातार मीडियावालों से मुखातिब हो रही थी। मैं एक मीडियावाले से बात कर रही थी तभी एक लड़की आयी और बोली : ''दीदी ! इनसे पूछो, ये लोग कहते थे कि बापूजी के साधक अब कम हो गये हैं। यहाँ इतने साधकों की भीड़ है तो क्या हम किराये पर आये हैं ?''

मैंने जैसे ही पीछे मुड़कर देखा तो मीडियावाला गायब था। १५-२० मिनट बाद उसका फोन आया, बोला : ''मैडम ! मैं जानता हूँ कि आपके बापूजी के केस में मीडिया ने ज्यादती की है लेकिन मैं वादा करता हूँ कि मैंने जो देखा है, वही दिखाऊँगा।''

साधकों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। वहाँ कभी सामूहिक प्रार्थना होने लगती तो कभी पूज्यश्री का जयघोष होने लगता।

सूर्यास्त हो चला था तभी एक नीला वाहन निकला जिसमें बापूजी थे। लोगों ने बापूजी का जयघोष किया। भीड़ इतनी अधिक थी कि किसीको बापूजी की केवल लाल टोपी दिखी, किसीको सफेद कपड़े दिखे। कुछ लोग गले मिल रहे थे कि 'हमें अच्छे दर्शन हो गये।' कुछ लोगों ने एम्स ट्रॉमा सेंटर की ही आरती कर डाली। कुछ लोग वहाँ की मिट्टी ले रहे थे जहाँ से बापूजी की गाड़ी निकली थी। कुछ लोग उस सड़क पर मत्था टेकने लगे।

रात हो गयी थी, मैं घर आ गयी, मैंने उस न्यूज चैनल को देखा जिसके रिपोर्टर ने गलत रिपोर्टिंग न करने का वादा किया था तो खबर संतुलित थी। मेरे मन से आवाज आयी :

फिजा में रंग साफ दिख रहे हैं,
लगता है अब समय बदलनेवाला है।

****

(पृष्ठ ९ का शेष) विद्यार्थियों को ओजस्वी-तेजस्वी, मेधावी तथा महान बनाना हो तो पूज्य बापूजी जैसे ब्रह्मज्ञानी महापुरुष के सत्संग की सीडी, डीवीडी व सत्साहित्य का लाभ दिलाना चाहिए, जिससे उनके द्वारा बतायी गयी कुंजियों को अपने जीवन में अपनाकर विद्यार्थी महान बन सकें। पूज्य बापूजी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में चलाये जा रहे गुरुकुलों व बाल संस्कार केन्द्रों एवं विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों में उन्हें भेजना चाहिए। 'ऋषि प्रसाद' जैसी चारित्र्य, नैतिकता और आध्यात्मिकता बढ़ानेवाली पत्रिका पढ़नी-पढ़ानी चाहिए।

****

रामानुजन की सूक्ष्म बुद्धि का राज

एक कक्षा में अध्यापक गणित पढ़ा रहे थे । उन्होंने श्यामपट्ट पर ३ केले बनाये और छात्रों से पूछा : ''यदि हमारे पास ३ केले और ३ ही विद्यार्थी हों तो प्रत्येक को कितने केले मिलेंगे ?''

एक विद्यार्थी तपाक-से बोल पड़ा : ''एक केला मिलेगा।''

अध्यापक बोले : ''बिल्कुल ठीक।''

अध्यापक आगे समझाने ही जा रहे थे, तभी एक विद्यार्थी ने पूछा : ''गुरुजी! यदि केलों को शून्य बच्चों में बराबर-बराबर बाँटा जाय, क्या तब भी प्रत्येक बच्चे को एक-एक केला मिलेगा ?''

यह सुनते ही सारे विद्यार्थी हँस पड़े कि 'क्या मूर्खतापूर्ण प्रश्न है !'

अध्यापक बोले : ''इसमें हँसने की कोई बात नहीं है । क्या आपको मालूम है कि यह विद्यार्थी क्या पूछना चाहता है ? यह जानना चाहता है कि यदि शून्य को शून्य से विभाजित किया जाय तो भी क्या परिणाम एक ही होगा ?''

यह गणित का एक बहुत महत्त्वपूर्ण सवाल था। कुछ गणितज्ञों का विचार था कि शून्य को शून्य से विभाजित करने पर उत्तर शून्य होगा जबकि अन्य लोगों का विचार था कि उत्तर एक होगा । अंत में इस समस्या का निराकरण भारतीय वैज्ञानिक भास्कर ने किया । उन्होंने सिद्ध किया कि 'शून्य को शून्य से विभाजित करने पर परिणाम शून्य ही होगा।' यह विद्यार्थी इसी तथ्य की ओर हमें ले जाना चाहता है।

इतनी छोटी उम्र में इतना सूक्ष्म सवाल पूछनेवाला वह बालक था श्रीनिवास रामानुजन, जो आगे चलकर भारत के विश्वप्रसिद्ध गणितज्ञ के रूप में प्रसिद्ध हुए। अत्यंत निर्धन परिवार में जन्मे रामानुजन ने ३२ वर्ष की आयु में गणित जगत में असाधारण कार्य किया । उनके बनाये गणित के एक-एक नमूने को हल करने में विश्व के बड़े-बड़े गणितज्ञों को कई वर्ष लग गये । वे इतने महान कैसे बने ?

रामानुजन बचपन से ही अकेले में शांत बैठने का अभ्यास करते थे । जाने-अनजाने में उनकी वृत्ति आज्ञाचक्र में पहुँच जाती थी । संकल्प-विकल्प शांत होने से बुद्धि को बल मिलता है । वे स्वभाव से ही मननशील व मितभाषी थे । रामानुजन अपनी पवित्र, सत्संगी माता के चरणस्पर्श कर आशीर्वाद पाने के बाद ही दिन की शुरुआत करते थे। उनकी माँ गंदी फिल्मों, नाटकों आदि से परे रहनेवाली सत्संगी माता थीं । वे सत्संग, गुरुमंत्र-जप और भ्रूमध्य के ध्यान में आगे बढ़ी थीं । उन्होंने गुरु के सत्संग के ज्ञान से अपनी समझ को सम्पन्न किया था । ऐसी सत्संगी माताओं के बच्चे महाधनभागी हैं ! यह लेख महिलाओं और उनके बालक-बालिकाओं को पढ़ना-पढ़ाना चाहिए।

ऐसे ही विश्वप्रसिद्ध जगदीशचन्द्र बसु, जो जीव-विज्ञान और भौतिक विज्ञान के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक थे, उनकी माँ ने कहा : ''बेटा ! संध्या हो गयी है । इस पेड़ की नींद खराब न करो ।'' माँ ने सत्संग में सुनी हुई बातें बतायीं ।

बालक ने बड़े होने पर वैज्ञानिक ढंग से खोज करके साबित कर दिखाया कि पेड़-पौधों को भी नींद आती है तथा सुख-दुःख होता है। माली के मन में पौधों को पानी पिलाने का भाव आते ही पौधे खुश हो जाते हैं और पेड़ काटनेवाले को देखकर पेड़-पौधे कम्पायमान होते हैं, डरते हैं। सूक्ष्म खोज के धनी जगदीशचन्द्र बसु की सत्संगी माँ को धन्यवाद जाता है। धन्य हैं भारतीय संस्कृति में जन्म लेनेवाले ! और उनसे ज्यादा धनभागी हैं वे, जो प्रकृति और पुरुष का वेदांतिक रहस्य अनुभवी महापुरुषों से सुन के इस नतीजे पर आते हैं कि 'परिवर्तन प्रकृति में है। शरीर, संसार, मन, बुद्धि और अहंकार - ये सब बदलते हैं। उसको जाननेवाला मैं आत्मा साक्षी, नित्य हूँ। परिवर्तनशील परिस्थितियाँ अनित्य हैं। दुःख में दुःखी होना और सुख में सुखीपने का अहंकार करना मूर्खता है। ॐ आनंद... ॐ साक्षी... ॐ चैतन्योऽहम्...'

भगवान श्रीकृष्ण ने क्या कृपा के वचन कहे गीता में -

सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः।

सुख-दुःख का द्रष्टा सुख-दुःख से अप्रभावित रहता है, वह परम योगी है। बंद आँख से भी (ध्यान-समाधि में) अपने ईश्वरत्व के आनंद में मस्त और खुली आँख से भी !

पूरे हैं वे मर्द जो हर हाल में खुश हैं।

उसने सारे तीर्थों में स्नान कर लिया, सब दान दे दिये, सब यज्ञ कर लिये, सब पितरों का तर्पण कर लिया जिसने एक क्षण के लिए भी अपने ब्रह्मस्वभाव में गोता मारा।

स्नातं तेन सर्व तीर्थं दातं तेन सर्व दानम्।
कृतं तेन सर्व यज्ञं येन क्षणं
मनः ब्रह्मविचारे स्थिरं कृतम्॥

रामानुजन को अध्यात्म, धार्मिक आचरण, ईश्वर-भक्ति माँ से मिली थी। वे व्यर्थ की बातों में अपना समय नष्ट नहीं करते थे। घर पर वे रामायण, महाभारत की कथाएँ बड़े मनोयोग से सुनते थे। उपनिषदों में उठाये गये गहन प्रश्न व उनके समाधानों को उन्होंने बड़ी गहराई से आत्मसात् किया था। तभी तो बाल्यावस्था में ही वे ऐसे गूढ़ प्रश्न पूछते थे : ''संसार में प्रथम पुरुष कौन था ? धरती और आकाश के बीच की दूरी कितनी है ?'' शैशवकाल में उनकी बुद्धि शून्य के विशेष स्थान की ओर संकेत कर रही थी।

एक बार रामानुजन ने अपने मित्र से कहा था : ''यदि कोई गणितीय समीकरण अथवा सूत्र किसी भगवत् विचार से मुझे नहीं भर देता तो वह मेरे लिए निरर्थक है।''

विश्वप्रसिद्ध गणितज्ञ प्रोफेसर गोडफ्रे हार्डी ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि 'रामानुजन अपने इंग्लैंड प्रवास के दौरान भी पूर्ण शाकाहारी ही रहे और सदा अपना भोजन स्वयं बनाते थे।' वहाँ भी उनको एकांत में तथा नदी किनारे रहना अच्छा लगता था। वे नित्य प्रातःस्नान के बाद तिलक लगाकर पूजा करते और नियमित ध्यान का अभ्यास करते थे। रामानुजन के जीवन के मूल में आध्यात्मिकता ही थी, जिससे वे लौकिकता की भी ऊँचाइयों पर पहुँच सके।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''बिना आध्यात्मिक उन्नति के भौतिक उन्नति आतिशबाजी के अनार जैसी है। जैसे आतिशबाजी का अनार दूर से सुंदर-सुहावना दिखायी देता है पर निकट जाओ तो जला देता है, ऐसे ही भौतिक सुख-सुविधाओं पर अत्यधिक निर्भरता अशांति, उद्वेग का कारण बन जाती है। आध्यात्मिक विद्या में आगे बढ़ेंगे तो ऐहिक चीजें तो पाले हुए कुत्ते की तरह पीछे-पीछे आती हैं।'' **(शेष पृष्ठ ७ पर)**

हमें बच्चों को यह संस्कार देना है

लखनऊ विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में **केन्द्रीय गृहमंत्री कर्मयोगी श्री राजनाथ सिंह** ने कहाः ''जो ज्ञान संस्कारों से जुड़ता है वह समाज के लिए कल्याणकारी होता है और जो ज्ञान संस्कारों से नहीं जुड़ता वह समाज के लिए विनाशकारी होता है। जो सभ्यताएँ अपने संस्कारों और मूल्यों से कट गयीं, वे लम्बे समय तक अस्तित्ववान नहीं रह पायीं। माता-पिता के चरण छूना भारतीय संस्कृति और परम्परा का अंग है। हमें बच्चों को यह संस्कार देना है कि वे 'हाय' और 'बाय' छोड़कर माता-पिता के चरण छुएँ।''

श्री राजनाथ सिंहजी ने मातृ-पितृ पूजन दिवस पर दिये अपने संदेश में कहा था : ''यह जानकर मुझे बहुत सुखद अनुभूति हुई कि पूज्य संत श्री आशारामजी बापू की प्रेरणा से १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन' के कार्यक्रम देशभर में आयोजित किये जा रहे हैं। इससे निश्चित रूप से बच्चों के अंदर एक अच्छा संस्कार पैदा होगा। आज यह जो भौतिकवादी मूल्यों के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ता जा रहा है, पाश्चात्य मूल्यों के प्रति जो लोगों का रुझान बढ़ रहा है, ऐसी सूरत में आज माता-पिता, अभिभावक उपेक्षित हो रहे हैं। माता-पिता का आशीर्वाद आवश्यक है। इस 'मातृ-पितृ पूजन' अभियान से बहुत ही अच्छा संदेश जायेगा। यह बच्चों के लिए एक अच्छा संस्कार और एक अच्छी परम्परा है।''

मीडिया ट्रायल्स से बनता है कोर्ट पर दबाव
- श्री अरुण जेटली

केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री कर्मयोगी श्री अरुण जेटली ने कहाः ''मीडिया ट्रायल्स से अदालतों पर हाई-प्रोफाइल मामलों में दबाव बनता है। मीडिया किसीको सीधे दोषी या निर्दोष साबित कर देता है। मीडिया को आत्मनिरीक्षण करना चाहिए क्योंकि समानांतर ट्रायल माहौल को प्रभावित करते हैं।

मीडिया को अदालत में विचाराधीन मुद्दों, किसी आतंकी घटना या किसी व्यक्ति की निजी जिंदगी से जुड़ी खबरों को प्रकाशित-प्रसारित करते वक्त सावधानी बरतनी चाहिए। मीडिया का काम खबरों के प्रसारण के जरिये सामाजिक तनाव पैदा करना नहीं है।''

'मातृ-पितृ पूजन' पुस्तक का महत्त्वपूर्ण योगदान

भारतीय संस्कृति अति प्राचीन है तथा अपनी समृद्ध परम्पराओं के लिए पूरे विश्व में विख्यात है। हमारी संस्कृति में माता-पिता तथा गुरुजनों का बहुत ऊँचा स्थान है। इस परम्परा को जीवंत रखने में 'मातृ-पितृ पूजन' पुस्तक का महत्त्वपूर्ण योगदान रहेगा।

- श्रीमती उर्मिला सिंह, राज्यपाल, हिमाचल

'मातृ-पितृ पूजन दिवस' से करोड़ों विद्यार्थियों की चहुँमुखी उन्नति

'मातृ-पितृ पूजन दिवस' का अभूतपूर्व कार्यक्रम देश के करोड़ों विद्यार्थियों का ओज, तेज व आत्मबल बढ़ाने व उनकी चहुँमुखी उन्नति करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। मैं इस अभूतपूर्व पहल की सराहना करता हूँ और इस अभियान की सफलता की कामना करता हूँ।

- श्री कप्तानसिंह सोलंकी, राज्यपाल, हरियाणा

आनंदस्वरूप के ज्ञान-माधुर्य को जगाने का उत्सव - पूज्य बापूजी

होली का त्यौहार छोटेपन-बड़ेपन की ग्रंथियों को हटाकर छोटे और बड़े की गहराई में जो सत्-चित्-आनंदस्वरूप है, उसके उल्लास को, ज्ञान को, माधुर्य को जगाने का उत्सव है। यह उत्सव मानवीय संकीर्णताएँ और मानवीय अहं को घुल जाने का सुंदर अवसर प्रदान करता है।

फाल्गुन की पूर्णिमा परमात्मा में विश्रांतिवाले प्रह्लाद की विजय का दिवस है। जिस सम्पदा और ऐहिक भोग के सिवाय कुछ भी सार और सत्य न सूझे, देह और भोग ही सत्य दिखें उसका नाम है हिरण्यकशिपु तथा देह व भोग मिथ्या हैं, उनको निहारने-जाननेवाला परमात्मा सत्य है, यह जिसको दिखे उसका नाम है प्रह्लाद ! इन दोनों के विचारों में वैमनस्य आ गया लेकिन प्रह्लाद उसके लिए अपने चित्त को उद्विग्न नहीं करते। वह प्रह्लाद को किसी भी प्रकार से अपने सिद्धांत में घसीटना चाहता है परंतु मेरु तो डगे पण जेनां मनडां डगे नै पानबाई। सुमेरु (सबसे विशाल प्राचीन पर्वत) तो डिग जाय पर जिसका मन न डिगे... हिरण्यकशिपु के अनेक प्रयत्नों के बावजूद भी जब प्रह्लाद भक्ति से न डिगा, तब उसने प्रह्लाद को मारने का काम अपनी बहन होलिका को सौंपा। होलिका को आग में न जलने का वरदान मिला था। चिता में बैठी हुई होलिका की गोद में प्रह्लाद को बिठा दिया गया और चिता को आग लगा दी गयी। परंतु यह क्या! होलिका जल गयी और प्रह्लाद जीवित रह गये। बिल्कुल उलटा हो गया क्योंकि प्रह्लाद सत्य की शरण थे, ईश्वर की शरण थे।

महापुण्यदायी होली की रात्रि

होली की रात्रि चार पुण्यप्रद महारात्रियों में आती है। होली की रात का जागरण, जप, ध्यान, महापुरुषों का सान्निध्य पुण्य का ढेर-ढेर पैदा करता है। इस रात्रि में अगर कोई संसार-व्यवहार करे तो महासत्यानाश भी होता है।

कैसे पायें स्वास्थ्य-लाभ ?

* होली की रात को बिना तेल-घी का भोजन करना चाहिए। इसके पीछे कितना सूक्ष्म रहस्य है कि चिकने-चटपटे पदार्थ खाने से कफ बढ़ता है। अतः बिना घी-तेलवाला रात्रि का भोजन हो तो सूखे अन्न से आपके कफ का अवशोषण होगा,

पाचन-तंत्र ठीक बना रहेगा।

✼ इन दिनों में कीर्तन-यात्रा निकालना विशेष हितकारी है।

✼ इस ऋतु में १५ से २० दिन रोज १५-२० नीम के कोमल पत्ते २ काली मिर्च के साथ चबा लें तो वर्षभर आपकी रोगप्रतिकारक शक्ति की रक्षा होगी।

✼ १५-२० दिन अलोना (नमक बिना का) भोजन करें तो आपका कफ संतुलित रहेगा, कमजोरी नहीं आयेगी, शरीर स्वस्थ बना रहेगा।

✼ इस मौसम में गन्ना चूसना, करेला खाना स्वास्थ्यप्रद है।

✼ प्राणायाम, आसन करने चाहिए। इससे जीवनशक्ति का विकास होता है।

✼ कूद-फाँद करना और नया धान्य, जिसको 'होला' बोलते हैं, सृष्टिकर्ता को अर्पण करके सेंककर बाँटते हुए खाना-खिलाना चाहिए।

✼ पूनम के दिन पंचगव्य का प्रसाद लेना चाहिए। इससे हड्डी तक के रोगों का शमन होता है।

धुलेंडी का उद्देश्य

होलिकोत्सव के बाद आता है धुलेंडी का उत्सव। यह उत्सव बहुआयामी है। न जाने किस-किस ढंग से जीव को अपनी सच्चाई की तरफ, स्वास्थ्य की तरफ और सामाजिक मेलजोल की तरफ उत्साहित कर देता है। 'मनमुटाव जो हो गया सो हो गया, भाई ! अब भूल जाओ, आज तो होली है।' अब ६ आदमियों के बीच में आपका प्रतिद्वन्द्वी भी है तो क्या आप ६ को अलग करके रंग छिड़कोगे कि ७वें पर भी छिड़क दोगे? और उस पर छिड़क दोगे तो वह चुप रहेगा क्या? वह भी हँस पड़ेगा। उसके अहं के भप्पू की पाल टूटने की सम्भावनाएँ हैं। राग-द्वेष और जगत की तुच्छता को महत्त्व देते हैं तभी मल (मलिनता) आता है कि 'मेरी दुकान, मेरा मकान, मेरी इज्जत...।' अतः अपने चित्त में राग या द्वेष को स्थान देकर अपना चित्त मलिन न करें, चित्त को निर्मल बनाइये क्योंकि इसका मूल स्थान निर्मल परमात्मा - आत्मा है।

पलाश के फूलों से होली खेलें

होली के बाद सूर्य की किरणें धरती पर सीधी पड़ेंगी तो आपके सप्तरंग और सप्तधातुएँ थोड़ी कम्पायमान होंगी। आपके शरीर में रोगप्रतिकारक शक्ति मजबूत रहे इसलिए इन्हें संतुलित रखने के लिए पलाश के पुष्पों से होली खेलने की व्यवस्था थी। दुर्भाग्यवश जब रासायनिक रंगों से होली खेलते हैं तो अभी वैज्ञानिक भी बताते हैं कि उनमें विभिन्न प्रकार के हानिकारक पदार्थ पड़ते हैं जो रोमकूपों के द्वारा तुम्हारे सप्तरंगों को उत्तेजित कर देते हैं और आँखों पर अगर उन रंगों का प्रभाव ज्यादा पड़े तो नजर पर बुरा असर पड़ सकता है। अपने बचाव के साथ-साथ अड़ोस-पड़ोस में भी इस बात का थोड़ा प्रचार कर देना।

पलाश के रंग से अगर आप होली खेलते हैं तो क्षमा व गम्भीरता का सद्‌गुण बढ़ेगा, उत्पादन शक्ति का सामर्थ्य बढ़ेगा, स्थिरता बढ़ेगी, वैभव बढ़ेगा, मजबूती और संजीदगी का आपका स्वभाव बढ़ेगा। हृदय-संस्थान और मस्तिष्क की दुर्बलता दूर होगी। उदासी और उन्माद दूर होगा। अगर आप रासायनिक रंगों से होली खेलते हैं तो इन सारे फायदों से वंचित होकर इसके विपरीत नुकसान होने की सम्भावना है। विदेशों में ऐसे सत्संग नहीं मिलते और लोग ऐसे-वैसे लाल रंगों के उत्तेजक कपड़े पहनते हैं या उत्तेजक दृश्य देखते हैं तो वे बेचारे

हिन्दुस्तानियों से ज्यादा बीमार, ज्यादा असहिष्णु और ज्यादा आत्महत्याएँ करके दुःख के भागी बनते हैं । हम तो चाहते हैं कि वे भी बेचारे सुख के भागी बनें और आप भी सुखस्वरूप प्रह्लाद की नाईं अपने जीवन में विघ्न-बाधाओं से अप्रभावित रहकर आनंद और माधुर्य में चमकते रहें ।

होली का पावन संदेश

स्थूल होली तो ठीक है लेकिन मानसिक होली भी मनानी चाहिए। भावना करनी चाहिए कि 'मैंने सद्गुरुदेव को अपना रंग लगा दिया और सद्गुरुदेव ने हमको अपना रंग लगाया' - जिसके पास जो हो, वह उसे दे। इस प्रकार होली पर संत कबीरजी ने, नानकदेवजी ने, संत भोलेबाबा ने और मेरे गुरुदेव (भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज) ने आपके दिल को ज्ञान, श्रद्धा, प्रेम, उदारता और माधुर्य से रँगने का उत्सव मनाने का संदेश दिया है। आज के दिन उन महापुरुषों को खूब-खूब प्रणाम !

होली का संदेश है कि छोटापन-बड़ापन वास्तविक नहीं है, वास्तविक तुम्हारा चैतन्यपन है। 'मैं कम पढ़ा हूँ, धन कम है, मेरा कोई नहीं है...' नहीं ! सारा जगत जिसका संकल्प है वह परमात्मा तेरा आत्मा होकर बैठा है । तू अपने को दीन-हीन मत मान, तुच्छ संकीर्णताओं को छोड़। यही होलिकोत्सव का उद्देश्य है।

दिल्ली-करोलबाग आश्रम में कोई अवैध निर्माण नहीं : वन विभाग

दिल्ली के करोलबाग स्थित मनोकामनासिद्ध हनुमान मंदिर में अवैध निर्माण की खबरों का खंडन करते हुए दिल्ली के वन विभाग ने कहा है कि परिसर में कोई अवैध निर्माण नहीं हुआ है।

विभाग के एक अधिकारी के मुताबिक बीते वर्ष के अंत तक वन विभाग के अधिकारियों ने कई बार आश्रम का दौरा किया परंतु कोई अवैध निर्माण नहीं मिला, ऐसी कोई अवैध गतिविधि या अतिक्रमण नहीं पाया गया जिससे आरक्षित वनीय क्षेत्र (रिजर्व्ड फॉरेस्ट एरिया) से संबंधित कानूनों का उल्लंघन होता हो । आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक एनजीटी (नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल) में दाखिल की जानेवाली इस रिपोर्ट में विभाग ने कहा है कि आश्रम में साइट प्लान के मुताबिक ही निर्माण किया गया है।

इस मामले में पहले आश्रम के भीतर बड़े स्तर पर अवैध निर्माण होने का दावा किया गया था लेकिन सर्वेक्षण के बाद अधिकारियों का कहना है कि करोलबाग आश्रम में उच्चतम न्यायालय के आदेश के उल्लंघन में कोई भी अवैध गतिविधि, स्थायी या अस्थायी ढाँचा नहीं पाया गया।

(संदर्भ : दैनिक भास्कर एवं नवभारत टाइम्स की वेबसाइट)

झूठी एवं बेबुनियाद खबरों के द्वारा कुछ प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने समाज को भ्रमित किया था कि आश्रम द्वारा अवैध निर्माण किया गया है तथा जमीन हड़पने की खबरें भी फैलायी गयीं लेकिन वन विभाग की इस रिपोर्ट से स्पष्ट होता है कि जो भ्रामक खबरें उछाली गयी थीं, उनका वास्तविकता से कोई लेना-देना नहीं था। आखिरकार सच्चाईरूपी सूर्य झूठरूपी काले बादलों को चीरकर सबके सामने आ ही जाता है। (श्री रू.भ. ठाकुर)

क्या जाने वो कैसो रे...

(भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का प्राकट्य दिवस : १६ मार्च)

ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों के क्रियाकलाप सहज होते हैं। उनके श्रीमुख से निकली सहज वाणी भी ईश्वरीय वाणी होती है। उससे कितनों का भला हो जाता है, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है यह घटना :

एक बार जेतपुर (गुजरात) में 'अखिल भारत लोअर सिंध पंचायत' का सम्मेलन था, जहाँ साँईं श्री लीलाशाहजी भी उपस्थित थे। सिंधी समाज एवं भक्तों के दृढ़ आग्रह की वजह से लगभग हर सम्मेलन में स्वामीजी जरूर जाते थे तथा समस्त कार्यवाही उनकी देखरेख में चलती थी।

उस सम्मेलन में किसीने प्रधान को एक चाँदी की डिब्बी भेंट में दी। डिब्बी का सदुपयोग समाज के लिए हो इस उद्देश्य से साँईं लीलाशाहजी ने उसे नीलाम करके उससे मिलनेवाले पैसों को सामाजिक कार्य में लगाने की युक्ति अपनायी। महापुरुषों से प्राप्त प्रसाद की महत्ता कौन कितनी समझता है यह देखने तथा सेवा में अधिक-से-अधिक योगदान हो इसलिए नीलामी की जिम्मेदारी साँईंजी ने स्वयं ले ली। वे बड़े ही सहज ढंग से डिब्बी हाथ में लेकर सम्मेलन में आये हुए सदस्यों को कहने लगे कि ''इसकी बड़ी बोली लगाओ।'' कभी-कभी तो स्वयं ही किसी-किसी भक्त से कहते कि ''तुम्हारी बोली इतनी या इतनी ?'' इस प्रकार आखिर में वह डिब्बी, जिसकी कीमत ५० रुपये से अधिक न थी, वह ५०० रुपये में अहमदाबाद के एक कपड़ा व्यवसायी भक्त ने ली।

सचमुच, जिनके लिए सारा ब्रह्मांड तिनके के समान है, जिनके लिए तीनों कालों में जगत बना ही नहीं, केवल स्वप्नवत् मिथ्या है, ऐसे ब्रह्मनिष्ठ संत छोटे-से-छोटे कार्य को भी एक कुलीन राजकुमार की नाईं करते हैं, एक कलाकार के रूप में अपना किरदार बखूबी निभाते हैं। लेकिन उनकी ऐसी लौकिक क्रियाओं के पीछे छुपे रहस्यों को बाह्य दृष्टि से नापने-तौलनेवाले लोग समझ नहीं पाते।

शाम के समय जब स्वामीजी अपने निवास पर आये तो एक सेवक ने कहा : ''स्वामीजी! आज तो आपने 'ऑक्शनर्स' जैसी भूमिका निभायी।''

स्वामीजी ने पूछा : ''ऑक्शनर्स क्या ?''

''स्वामीजी ! ऑक्शनर्स माने जो नीलामी करनेवाले होते हैं, वे ऐसे ही अपने सामान की तारीफ करके उसका मूल्य बढ़ाने में अपनी कला दिखाते हैं।''

''भला, ऐसा मैंने क्या किया ?''

''स्वामीजी ! आप ऐसे कह रहे थे कि जैसे यह डिब्बी नहीं साक्षात् लक्ष्मी है लक्ष्मी !...''

यह सुन स्वामीजी थोड़ा मुस्कराये, फिर शांत हो गये। ऐसे प्रश्नों का कभी महापुरुष जवाब न भी दें लेकिन प्रकृति अवश्य उत्तर देती है। उस समय स्वामीजी की वह रहस्यमयी मुस्कराहट कोई समझ नहीं पाया लेकिन कुछ समय बाद पता चला कि जिसने वह डिब्बी ली थी वह व्यापारी तो मालामाल हो गया है ! तब उस सेवक को हुआ कि ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों की लीलाओं को मानुषी बुद्धि से तौलना असम्भव है। इसीलिए गुरुवाणी में आता है :

ब्रहमगिआनी की मिति कउनु बखानै ।

ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों में कर्तापन नहीं होता। निःस्वार्थ, निखालिस ब्रह्मवेत्ताओं की ऐसी लीलाएँ जहाँ एक ओर लोकमांगल्यकारी होती हैं, वहीं दूसरी ओर भक्तों को आनंदित-आह्लादित, उन्नत कर देती हैं।

यदि आत्मविचार को दृढ़तापूर्वक दोहरायें तो वृत्ति आत्माकार होती जाती है और आत्मा का ज्ञान हो जाता है।

''पूज्य बापूजी को जमानत मिलनी चाहिए''

- श्री सिंहलजी
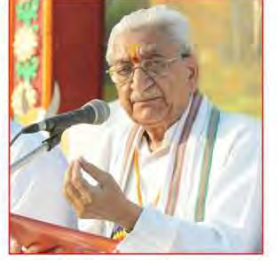
विश्व हिन्दू परिषद के मुख्य संरक्षक व पूर्व अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक सिंहलजी ने दावा किया कि ''संत आशारामजी बापू को फँसाया गया है। इस देश में हमारे संतों को बदनाम करने का बहुत बड़ा षड्यंत्र चला है। हिन्दू धर्म, संस्कृति को नष्ट करने के लिए ये केवल हम पर केस ही नहीं चलाते हैं, अपितु गंदे-गंदे आरोप और वह भी कई महीनों तक लगाते रहते हैं। उनको लगता है कि 'हम इतने गंदे आरोप लगायेंगे तो संतों के प्रति लोगों की श्रद्धा नष्ट हो जायेगी।' मेरा यह मानना है कि विदेश के लोगों को यह नहीं मालूम है कि हमारे यहाँ की श्रद्धाएँ, उनकी जड़ें कितनी गहरी हैं।''

कानून में किसीको भी फँसाया जा सकता है

श्री अशोक सिंहलजी ने जोधपुर जेल में संत आशारामजी बापू से मुलाकात की। पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि ''७६ साल की उम्र में उन्हें (पूज्य बापूजी को) गलत तरीके से फँसाकर प्रताड़ित किया जा रहा है। कांची के शंकराचार्यजी को प्रताड़ित किया गया। इसी तरह स्वामी असीमानंद भी प्रताड़ित किये जा रहे हैं। साजिश के बावजूद देश में संतों के प्रति श्रद्धा में कोई कमी नहीं आयी है। कानून में किसीको भी फँसाया जा सकता है। आरोप किसी पर भी लग सकते हैं, आखिर में जीत न्याय (सत्य) की होती है।''

मीडिया ट्रायल और ऊधम मचानेवाले एनजीओज् के पीछे कौन ?

संतों व हिन्दू संस्कृति को बदनाम करनेवालों को उजागर करते हुए सिंहलजी बोले : ''मीडिया ट्रायल और ऊधम मचानेवाले एनजीओज् के पीछे कौन है ? हिन्दू धर्म व संस्कृति को नष्ट करने के लिए मीडिया ट्रायल पश्चिम का बड़ा भारी षड्यंत्र है हमारे देश के भीतर ! हमारे यहाँ के बड़े-बड़े संतों के पास लाखों लोग आते हैं तो ये एनजीओज् ऊधम मचाने के लिए वहाँ खड़े हो जाते हैं। देश में विदेशी पैसों से लाखों एनजीओज् चलाये जा रहे हैं, जो इस देश की राजनीति को अपनी मुट्ठी में किये हैं।

षड्यंत्र की पूरी जाँच होनी चाहिए

बापूजी को माननेवाले बहुत बड़ी संख्या में हैं। मैं समझता हूँ, कहीं भी छोटा-सा भी कार्यक्रम होता है तो ५० हजार, ६० हजार - इतनी संख्या से कम लोग नहीं आते हैं। मैं मानता हूँ कि जिनकी साधना, सच्चाई न हो वे इतना बड़ा एकत्रीकरण नहीं कर सकते।

यह सारा कुछ (आरोप, केस आदि) बनावटी है ऐसा मेरा मानना है। केस चल रहा है मगर ७६ वर्ष की उम्र में बापूजी को इतना कष्ट दिया गया है और इस प्रकार से उनके तथा उनके नाम से हिन्दू संतों और हिन्दू समाज के सिर पर कुल्हाड़ा मारा गया है। मैं तो देखता था, सब किस प्रकार से मीडिया के लोग उनके विषय में बोलते थे। मेरे अंदर से आग लगती थी कि इस प्रकार से मीडिया का उपयोग कर रहे हैं विदेश के लोग ! उसके लिए भारी मात्रा में फंड्स देते हैं, जिससे हिन्दू धर्म के खिलाफ देश के भीतर वातावरण पैदा हो। उनको मालूम नहीं है कि हमारी जड़ें कहाँ पर हैं। वे खुद मिट जायेंगे लेकिन हमको नहीं मिटा पायेंगे।

यह सब विदेशों का बड़ा षड्यंत्र है। इसलिए मेरा यह मानना है कि हमारे संतों के साथ इस प्रकार का जो षड्यंत्र किया गया है, आनेवाले समय में इसकी पूरी जाँच होनी चाहिए कि कौन हैं इस काम को करनेवाले ?

बापूजी को जेल में रहते हुए बहुत शारीरिक, मानसिक कष्ट दिया गया है। वे कहते हैं : 'मैं जीवित हूँ यही आश्चर्य है।' मेरा मानना है कि बापूजी को जमानत मिलनी चाहिए।''

(संदर्भ : दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका, सुदर्शन न्यूज, तेज न्यूज, न्यूज २४)

अखिल गुप्ता हत्याकांड से आश्रम का कोई संबंध नहीं

हाल ही में मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) में अखिल गुप्ता, जो अहमदाबाद केस में गवाह के रूप में शामिल था, उसकी हत्या का मामला सामने आया है। कुछ मीडिया द्वारा नकारात्मक तरीके से इस मामले के साथ आश्रम व पूज्य बापूजी के नाम को जोड़कर कुप्रचारित किया गया जबकि इस हत्याकांड से आश्रम का दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं है।

यह विचारणीय है कि अहमदाबाद केस में आरोप लगानेवाली महिला ने स्वयं गांधीनगर सत्र न्यायालय में एक अर्जी डालकर बताया है कि उसने पहले जो बयान दिया था वह डर और भय के कारण दिया था। अब वह दूसरा बयान देकर सत्य उजागर करना चाहती है। ऐसे में आश्रम के लिए गवाह अखिल बहुत महत्त्वपूर्ण था क्योंकि न्यायालय में उससे जवाब-तलब होते तो सच्चाई सामने आती कि किसके दबाव में आकर उसने झूठी गवाही दी थी।

जिस केस का कोई वजूद ही नहीं है, कानूनी प्रक्रिया में जो टिक नहीं सकता, जो मात्र कपोलकल्पित कहानियों पर आधारित है ऐसे मामले में गवाहों पर हमला करवा के कोई अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी क्यों मारेगा ? एक ओर उच्चतम न्यायालय में जमानत याचिका पर बहस चल रही हो, उसी समय ऐसी हरकतें करने की नादानी कोई साधारण समझ रखनेवाला व्यक्ति भी क्यों करेगा?

अखिल की मृत्यु से पूज्य बापूजी को गहरी पीड़ा हुई है

अखिल गुप्ता की हत्या के मामले में संवेदना प्रकट करते हुए पूज्य बापूजी ने पत्रकारों से कहा कि ''वह (अखिल) बेचारा मेरे को खाना खिलाता था, वह चला गया, मेरे को चोट लगी है। मेरे को कितनी पीड़ा है ! वह तो मेरा हीरा था हीरा ! मेरी सेवा के लिए नियोजन करनेवाला ऐसा रसोइया मेरे जीवन में पहली बार आया था। मैंने तो उसके हाथ की रोटी खायी, मैं उसको क्यों मरवाऊँगा ? क्या ऐसा हो सकता है ? उसके माँ-बाप भी बोलते हैं कि आश्रम की तरफ से ऐसा नहीं है। दुनिया में कोई कुछ भी करे, सब मेरे सिर पर आयेगा क्या ?''

''कौन साजिश कर रहा है ?'' - पत्रकारों के इस सवाल के जवाब में बापूजी ने कहा : ''कौन साजिश करता है, दुनिया जान रही है। मैं भिड़ना नहीं जानता किसीसे, मेरे पास ईश्वर के लिए समय है, भिड़ने के लिए समय नहीं है। मैं हिन्दू धर्म की महानता जानता हूँ। किसी धर्म का मैं विरोध नहीं करना चाहता हूँ, भगवान साक्षी हैं लेकिन हिन्दू धर्म की महानता का प्रसाद लेकर बैठा हूँ इसलिए मेरा गला दबोचा जा रहा है। आज तक जो भी मेरे ऊपर आरोप लगे हैं - 'बच्चों की हत्या करवायी, फलाना करवाया...' सब-के-सब फर्जी निकले और यह केस भी फर्जी ही है, फर्जी निकलेगा।''

जमानत की तारीख के पहले ही क्यों सामने आती हैं ऐसी खबरें ?

गवाहों पर हमले, धमकियाँ तथा तमाम प्रकार की अन्य काल्पनिक खबरें एवं अटकलें पूज्य बापूजी की जमानत की तारीख के आसपास ही क्यों उपजती हैं ? निश्चित है कि इसके पीछे अवश्य ही कोई गिरोह सुनियोजित रूप से कार्य कर रहा है जो ऐसी घटनाओं के द्वारा बापूजी की जमानत के खिलाफ एक नकारात्मक

माहौल खड़ा कर न्यायिक प्रक्रिया को प्रभावित करना चाहता है। ऐसे गिरोह की जाँच होनी चाहिए। कभी जोधपुर पुलिस के डीसीपी अजयपाल लाम्बा को धमकी, कभी जाँच अधिकारी को तो कभी लड़की के पिता को धमकी की खबरें उछलती हैं। इनमें से आज तक किसी भी आरोप की पुष्टि नहीं हुई है। पूर्व में सूरत डीसीपी शोभा भूतड़ा को धमकी देने के मामले में आश्रम को घसीटा गया लेकिन जाँच करने पर पता चला कि धमकी देनेवाले शख्स का आश्रम से कोई संबंध नहीं है। हाल ही में अहमदाबाद मामले में आरोप लगानेवाली सूरत की महिला के गायब होने की खबरों में भी आश्रम के नाम को खूब उछाला गया, जबकि उस महिला ने स्वयं मीडिया के सामने आकर कहा है कि वह कहीं गायब नहीं थी और न ही आश्रम की तरफ से किसी प्रकार का उस पर कोई दबाव है।

कुछ माह पूर्व अमृत प्रजापति गोलीकांड की खबरें चलीं। अमृत प्रजापति के दो गनमेन अंगरक्षक थे और वह खुद भी गनमैन था। गांधीनगर (गुज.) में श्री नरेन्द्र मोदी के समारोह में नाम बदलकर गया और वहाँ उसकी गन पकड़ी गयी, ऐसा वह आदमी था। साजिशकर्ताओं को अमृत प्रजापति का उपयोग कर साजिश करके आश्रम के साधकों को फँसाना था, अतः मुँह में गोली लगवा के मीडिया में दिखाया गया। दाँव उलटा पड़ गया, इलाज की गड़बड़ी या ऐसे ही किसी कारण से वह रवाना हुआ। पूर्व में षड्यंत्रकारियों का मोहरा बने ब्रजबिहारी गुप्ता उर्फ भोलानंद ने साजिशकर्ताओं के ये मंसूबे उजागर करते हुए पहले ही बता दिया था कि साजिशकर्ताओं की ऐसी पूरी प्लानिंग है कि वे एक-दूसरे को गोली लगवा देंगे और केस बना के बापू पर या आश्रम पर डाल देंगे।

'आदर्श पंचायती राज पत्रिका ग्रुप' के चेयरमैन एवं प्रधान सम्पादक श्री अशोक पंडित ने गवाह अखिल के बारे में कहा कि ''संत आशारामजी बापू के विरुद्ध दुष्कर्म का झूठा आरोप लगानेवाली सूरत की महिला ने जब यह उजागर कर दिया कि उससे डरा-धमकाकर झूठा मुकदमा दर्ज करवाया गया है तो अब इस केस में गवाही के लिए तैयार किया गया अखिल गुप्ता भी कहीं सच्चाई उजागर न कर दे, इसलिए लगता है अब षड्यंत्रकारियों ने ही उसे निपटा दिया है, ताकि कम-से-कम उसकी जबान तो हमेशा के लिए बंद की जा सके।''

(श्री ऋ.अ. शेहरावत)

इन तिथियों का लाभ लेना न भूलें

२५ फरवरी : बुधवारी अष्टमी (सुबह १०-५५ से २६ फरवरी सूर्योदय तक)

१ मार्च : रविपुष्यामृत योग (रात्रि ११-५४ से २ मार्च सूर्योदय तक), आमलकी एकादशी (व्रत करके आँवले के वृक्ष के पास रात्रि-जागरण एवं उसकी १०८ या २८ परिक्रमा करने से सब पापों से मुक्ति व सहस्र गोदान का फल।)

५ मार्च : होलिका दहन (सम्पूर्ण रात्रि का जागरण और जप बहुत ही फलदायी होता है। जागरण व जप करने से मंत्र की सिद्धि होती है।)

१० मार्च : मंगलवारी चतुर्थी (सूर्योदय से सुबह ८-५८ तक)

१५ मार्च : षडशीति संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर १२-४८ तक) इस तिथि में जप-ध्यान व पुण्यकर्म का फल ८६,००० गुना होता है। (पद्म पुराण)

१७ मार्च : पापमोचनी एकादशी (व्रत से पापराशि का विनाश तथा माहात्म्य पढ़ने-सुनने से सहस्र गोदान का फल।)

नियमनिष्ठा महकाये जीवन की बगिया

महापुरुषों के जीवन को निहारा जाय तो उसमें किसी-न-किसी व्रत-नियम का प्रकाश अवश्य मिलेगा । श्री रमण महर्षि का मौन-व्रत, पितामह भीष्म, आद्य शंकराचार्यजी आदि का ब्रह्मचर्य-व्रत तथा कणाद, पिप्पलाद आदि ऋषियों के आहारसंबंधी व्रत इतिहासप्रसिद्ध हैं । ब्रह्मनिष्ठ पूज्य बापूजी की भी नियमनिष्ठा सभीके लिए प्रकाशस्तम्भ है ।
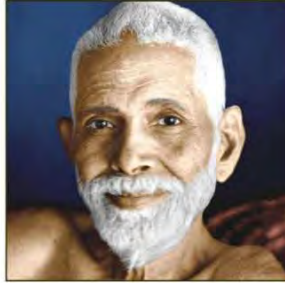
व्रत से जीवन में दृढ़ता आती है।

व्रतेन दीक्षामाप्नोति...

अव्रती व्यक्ति काम करते हुए ऊब जायेगा, पलायन कर जायेगा, दूसरे को दोष देगा परंतु व्रती आदमी दूसरे को दोष नहीं देगा। आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों व्रत कार्य-साफल्य ले आयेगा।

गांधीजी के आश्रम का नियम था कि भोजन की हर पंगत के लिए दो घंटियाँ बजने के बाद रसोई-घर का दरवाजा बंद कर दिया जाता था। दूसरी घंटी बजने के बाद आनेवाले व्यक्तियों को अगली पंगत के लिए इंतजार करना पड़ता था।

गांधीजी हमेशा तो सही समय पर रसोई-घर पहुँच जाते थे किंतु एक दिन उन्हें पहुँचने में थोड़ी देर हो गयी, दरवाजा बंद हो चुका था। गांधीजी मानते थे कि 'आश्रम का बनाया नियम सबके लिए समान है।' अतः वे बाहर ही अगली पंगत का इंतजार करते रहे। यदि वे जाना चाहते तो उन्हें कौन रोक सकता था परंतु गांधीजी में छोटे-से नियम के प्रति भी दृढ़ता थी। इस प्रकार नियम-पालन से ही उनमें आत्मबल, सहनशीलता आदि गुणों का विकास हुआ, जिनके प्रभाव से वे स्वतंत्रता-संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा पाये।

नियम भले छोटा-सा ही क्यों न हो, अगर उसका दृढ़तापूर्वक पालन किया जाय तो संकल्पशक्ति बढ़ती है, आत्मविश्वास जागता है, मन वश होता है तथा दोषों व कुसंस्कारों से छुटकारा पाने का बल मिलता है । 'ऋग्वेद' (९.६१.२४) में आता है : **व्रतेषु जागृहि ।** 'आप अपने व्रत-नियमों के प्रति सदा जागृत रहें ।'

पूज्य बापूजी के आश्रमों में भी पूज्यश्री के निर्देशानुसार बनाये गये शास्त्रोचित खान-पान, रहन-सहन, साधना-सेवा आदि के नियमों व व्रतों का पालन होता है, जिससे यहाँ आनेवाले साधक सहज में ही शीघ्र उन्नति कर अलौकिक अनुभवों के धनी बन जाते हैं।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''अपने चित्त में परमात्मा को पाने के लिए कोई दिव्य, पवित्र, आत्मसाक्षात्कार में सीधे साथ दें ऐसे व्रत-नियम डाल दें । जरा-जरा बात में सुख के लालच में, दुःख के भय में फिसल पड़ते हैं । नहीं... जैसे गांधीजी ने अपने जीवन में व्रत रख दिये थे - सप्ताह में एक दिन न बोलने का व्रत, ब्रह्मचर्य का, सत्य का, प्रार्थना का व्रत... ऐसा ही कोई व्रत अपने जीवन में, अपने चित्त में रख दें जिससे अपने लक्ष्य की तरफ दृढ़ता से चल सकें और अपना ईश्वरीय अंश विकसित कर सकें ।''

महापुरुषों के जीवन को निहारा जाय तो उसमें किसी-न-किसी व्रत-नियम का प्रकाश अवश्य मिलेगा । श्री रमण महर्षि का मौन-व्रत, पितामह भीष्म, आद्य शंकराचार्यजी आदि का ब्रह्मचर्य-व्रत तथा कणाद, पिप्पलाद आदि ऋषियों के आहारसंबंधी व्रत इतिहासप्रसिद्ध हैं । ब्रह्मनिष्ठ पूज्य बापूजी की भी नियमनिष्ठा सभीके लिए प्रकाशस्तम्भ है । पूज्यश्री आत्मसाक्षात्कार जैसी पराकाष्ठा पर पहुँचने के बाद भी आज भी अपना नियम किये बिना कुछ नहीं सेवन करते । प्रतिदिन सत्संग करना भी पूज्यश्री के जीवन का एक अभिन्न अंग है । वर्ष में एक भी दिन पूज्यश्री बिना सत्संग के नहीं रहते । आज कारागृह में भी अपनी सत्संग की कुंजियों द्वारा कैदियों तथा कर्मचारियों का जीवन उन्नत कर रहे हैं । कैसी है महाराजश्री के जीवन में नियमनिष्ठा की सुवास, जो सर्व-मांगल्य के भाव से ओतप्रोत है ! वास्तव में नियम-पालन ब्रह्मज्ञानप्राप्ति का महत्त्वपूर्ण साधन है । जीवन्मुक्त महापुरुषों के लिए नियमों का बंधन नहीं है परंतु समाज को सही दिशा देने के उद्देश्य से वे आत्मारामी महापुरुष भी नियमों को स्वीकार कर लेते हैं, यह उनकी कितनी करुणा-कृपा है !

ऐसा कोई व्रत अपने जीवन में रख दें जिससे अपने लक्ष्य की तरफ दृढ़ता से चल सकें और अपना ईश्वरीय अंश विकसित कर सकें ।

****

(पृष्ठ २० का शेष) (५) जीवन में केवल ईश्वर को महत्त्व दें । सबमें कुछ-न-कुछ गुण-दोष होते ही हैं । ज्यों-ज्यों साधक संसार को महत्त्व देगा त्यों-त्यों दोष बढ़ते जायेंगे और ज्यों-ज्यों ईश्वर को महत्त्व देगा त्यों-त्यों सद्गुण बढ़ते जायेंगे ।

(६) साधक का व्यवहार व हृदय पवित्र होना चाहिए । लोगों के लिए उसका जीवन ही आदर्श बन जाय, ऐसा पवित्र उसका आचरण होना चाहिए ।

इन ६ बातों को अपने जीवन में अपनाकर साधक अपने लक्ष्य को पाने में अवश्य कामयाब हो सकता है । अतः लक्ष्य ऊँचा हो । मुख्य कार्य और अवांतर कार्य भी उसके अनुरूप हों ।

साधना में जल्दी प्रगति के लिए महत्त्वपूर्ण छः बातें

कई लोग कहते हैं कि माला करते-करते नींद आने लगती है तो क्या करें ? सतत माला नहीं होती तो आप सेवा करें, सत्शास्त्र पढ़ें। मन बहुआयामी है तो उसको बहुत प्रकार की युक्तियों से सँभाल के चलाना चाहिए। कभी जप किया, कभी ध्यान किया, कभी स्मरण किया, कभी सेवा की - इस प्रकार की सत्प्रवृत्तियों में मन को लगाये रखना चाहिए।

साधक यदि इन ६ बातों को अपनाये तो साधना में बहुत जल्दी प्रगति कर सकता है :

(१) व्यर्थ की बातों में समय न गँवायें। व्यर्थ की बातें करेंगे-सुनेंगे तो जगत की सत्यता दृढ़ होगी, जिससे राग-द्वेष की वृद्धि होगी और चित्त मलिन होगा। अतः राग-द्वेष से प्रेरित होकर कर्म न करें।

सेवाकार्य तो करें लेकिन राग-द्वेष से प्रेरित होकर नहीं अपितु दूसरे को मान देकर, दूसरे को विश्वास में लेकर सेवाकार्य करने से सेवा भी अच्छी तरह से होती है और साधक की योग्यता भी निखरती है। भगवान श्रीरामचन्द्रजी औरों को मान देते और आप अमानी रहते थे। राग-द्वेष में शक्ति का व्यय न हो इसकी सावधानी रखते थे।

(२) अपना उद्देश्य ऊँचा रखें। भगवान शंकर के श्वशुर दक्ष प्रजापति को देवता लोग तक नमस्कार करते थे । ऋषि-मुनि भी उनकी प्रशंसा करते थे । सब लोकपालों में वे वरिष्ठ थे। एक बार देवताओं की सभा में दक्ष प्रजापति के जाने पर अन्य देवों ने खड़े होकर उनका सम्मान किया लेकिन शिवजी उठकर खड़े नहीं हुए तो दक्ष प्रजापति को बुरा लग गया कि दामाद होने पर भी शिवजी ने उनका सम्मान क्यों नहीं किया ?

इस बात से नाराज हो शिवजी को नीचा दिखाने के लिए दक्ष प्रजापति ने यज्ञ करवाया। यज्ञ में अन्य सब देवताओं के लिए आसन रखे गये लेकिन शिवजी के लिए कोई आसन न रखा गया। यज्ञ करना तो बढ़िया है लेकिन यज्ञ का उद्देश्य शिवजी को नीचा दिखाने का था तो उस यज्ञ का ध्वंस हुआ एवं दक्ष प्रजापति की गर्दन कटी। बाद में शिवजी की कृपा से बकरे की गर्दन उनको लगायी गयी। अतः अपना उद्देश्य सदैव ऊँचा रखें ।

(३) जो कार्य करें, उसे कुशलता से पूर्ण करें। ऐसा नहीं कि कोई विघ्न आया और काम छोड़ दिया। यह कायरता नहीं होनी चाहिए। योगः कर्मसु कौशलम्। योग वही है जो कर्म में कुशलता लाये।

(४) कर्म तो करें लेकिन कर्तापने का गर्व न आये और लापरवाही से कर्म बिगड़े नहीं, इसकी सावधानी रखें। यही कर्म में कुशलता है । सबके भीतर बहुत सारी ईश्वरीय सम्पदा छिपी है । उस सम्पदा को पाने के लिए सावधान रहना चाहिए, सतर्क रहना चाहिए। (शेष पृष्ठ १९ पर)

सत्य के साक्षात्कार का एकमात्र मार्ग

सत्य का साक्षात्कार करने के लिए देशांतर, कालांतर या वस्त्वंतर (वस्तु-अंतर = अन्य-अन्य वस्तु) की ओर दौड़ना और उनके ओर-छोर को प्राप्त कर लेने का प्रयास करना निरर्थक है। उनके स्वरूप को जानने के लिए दृश्य की ओर से अनुसंधान का मुख मोड़ना पड़ेगा। द्रष्टा ही ज्ञान है, भान अनुभव है। अतः दृश्य से विमुख होकर अपने अंतरात्मा की ओर उन्मुख होना ही एकमात्र मार्ग है। इसीको जिज्ञासा अर्थात् ज्ञान का स्वरूप जानने की इच्छा कहते हैं। आप स्वयं देख सकते हैं कि आप सत्य को ज्ञान का विषय - ज्ञेय बनाना चाहते हैं अथवा स्वयं ज्ञानस्वरूप आत्मा से जो विमुखता है, अपना ही बनाया हुआ आवरण है, उसको भंग करना चाहते हैं ?

आप मानिये या मत मानिये, आप अपने विचार की तलवार से आवरण भंग करने के लिए चाहे जितना तलवार का वार कीजिये किंतु यदि दृश्य में महत्त्वबुद्धि है, चाहे वह कहीं भी क्यों न हो- अंतर्दृश्य में, बहिर्दृश्य में, अहं में, इदं में, त्वं में, तत् में तो आप अपनी उस मानी हुई महान वस्तु को काट नहीं सकेंगे। अतः कालांतर की समाधि की कल्पना छोड़िये, देशांतर के ब्रह्मलोक का लोभ छोड़िये, वस्त्वंतर की उपलब्धि का मोह छोड़िये। आप दृढ़ता से अपने उस भानस्वरूप आत्मा का अनुसंधान कीजिये जिससे सब प्रकाशित होता है और जिसको अपने को या किसी दूसरे को प्रकाशित करने के लिए प्रकाशांतर की आवश्यकता नहीं।

इसमें संदेह नहीं कि जब तक दृश्य की किसी भी आंतर-बाह्य रूपरेखा में महत्त्वबुद्धि, हेयबुद्धि (त्याज्यबुद्धि), उपादेयबुद्धि (ग्रहणबुद्धि), सुखबुद्धि, दुःखबुद्धि बनी रहेगी, तब तक आपकी बुद्धि अपने को प्रकाश देनेवाले सत्य आत्मा का आवरण-भंग करने में समर्थ नहीं होगी। यदि बुद्धि अपने द्वारा प्रकाशित को भी देखना चाहेगी और राग की रक्तिमा तथा द्वेष की कालिमा से दृश्य को सटाने-हटाने में संलग्न रहेगी तो विमल-धवल होकर अपने स्वप्रकाश अधिष्ठान से अभिन्नता को नहीं जान पायेगी, जो कि स्वतःसिद्ध है। इसी प्रक्रिया को श्रुति-शास्त्र ने निवृत्ति, वैराग्य अथवा अंतःशुद्धि के नाम से कहा है।

हमारे दुराग्रह के दो रूप हैं - एक तो अपने व्यक्तित्व में, चाहे वह स्थूल हो या सूक्ष्म हो या कारण ही क्यों न हो, यह नैसर्गिक है। दूसरा शास्त्र के द्वारा आरोपित लोक-परलोकगामी संसारित्व में। शास्त्र द्वारा आरोपित पदार्थ में दुराग्रह शास्त्र के ही विचार से बाधित हो जाता है परंतु अपने व्यक्तित्व में जो नैसर्गिक आग्रह है, उसकी निवृत्ति तीव्र अभीप्सा एवं आत्मा के निरीक्षण-परीक्षण-समीक्षण की अपेक्षा रखती है। यह **(शेष पृष्ठ २८ पर)**

मनुष्य-जीवन किसलिए ?

- पूज्य बापूजी

ईश्वरप्राप्ति में बहुत मजा है, यह बहुत सुगम है। संसार-सागर तरना गाय के खुर को लाँघने के समान सुगम है - यह बाद में पता चला, पहले मैंने भी बहुत पापड़ बेले थे। लेकिन मेरे गुरुदेव को जो मेहनत करनी पड़ी थी, उसका सौवाँ हिस्सा भी मुझे नहीं करनी पड़ी। अनजाने में मुझे जितनी मेहनत करनी पड़ी, उसका हजारवाँ हिस्सा भी तुमको नहीं करनी है।

माँ को कितनी मेहनत करनी पड़ती है - गेहूँ लाओ, सब्जी लाओ, रोटी बनाओ पर बेटे को तो बस चबाना है। गाय को मेहनत करनी होती है- चारा खाना, चबाना लेकिन बछड़े को तो बस 'सकुर-सकुर' दूध पीना है। उसको तो मुँह हिलाना पड़ता है, तुमको तो मुँह भी नहीं हिलाना केवल कानों के द्वारा सुनना है, तैयार माल पड़ा है।

दुनियादारी की सारी विद्याएँ सीख लो, सबकी बातें मान लो पर दुःखों का अंत नहीं होगा और परमानंद नहीं मिलेगा।

जीवन केवल दुःख मिटाने और बाहरी सुख पाने के लिए नहीं है। नौकरी करते हैं तो सुखी होने के लिए, फर्नीचर खरीदते हैं तो सुखी होने के लिए, शादी करते हैं तो सुखी होने के लिए, तलाक देते हैं तो सुखी होने के लिए, झुकते हैं तो सुखी होने के लिए, रोब मारते हैं तो सुखी होने के लिए, रोते हो तो सुख के लिए। दुःख मिटाना और सुख को थामना यही तो दो काम करते हो जीवनभर ! तीसरा क्या करते हो ?

सुबह से शाम तक और जन्म से मौत तक सभी लोग यही कर रहे हैं। आश्चर्य तो यही है कि दुःख को भगाते-भगाते और सुख को थामते-थामते जिंदगी पूरी हो जाती है लेकिन अंत में दुःख ही रह जाता है। लोग मरते समय दुःखी हो के, चिंता ले के मरते हैं क्योंकि मूल में ही गलती आ गयी। मुझमें भी थी, मैं भी तुम्हारी पंक्ति में ही था। हम भी दुःख भगाने और सुख को पाने में लगे थे। जब गुरु के द्वार गये तो उन परम दयालु सद्गुरु दाता ने घर में घर दिखा दिया... दिल में ही दिलबर का दीदार करा दिया।

तो जीवन दुःख मिटाने और परम सुख पाने के लिए है, ज्ञानदाता सद्गुरु का आश्रय लेकर जीवनदाता का साक्षात्कार करने के लिए है।

दुःखों-परेशानियों से डरने का कारण : अज्ञान

एक विद्यालय के बंद होने से उस विद्यालय का मास्टर सर्कस में नौकरी करने चला गया। सर्कसवालों ने कहा : ''ठीक है, हम तुमको शेर की खाल पहना देंगे और तार पर चलना सिखा देंगे।'' सारी व्यवस्था हो गयी, करतब सिखा दिया गया।

पहले दिन मास्टर साहब को शेर का जामा पहनाकर तार पर चलने के लिए सर्कस में लाया गया। मास्टर साहब ने नीचे देखा तो शेर गुर्रा रहे हैं। अब इनका गुर्राना और चलना तो सही था लेकिन नीचे गुर्राते हुए शेरों को देखकर मास्टर डर गये कि 'कहीं मैं नीचे गिर गया तो ये तो मुझे फाड़कर खा लेंगे !' डर के मारे बेचारा घबराकर नीचे गिर गया, बोला : ''हे भगवान ! बचाओ।''

गुर्रानेवाले शेरों ने धीरे से कहा : ''पागल! हम भी उसी विद्यालय के हैं। हमने भी तुम्हारे जैसी खाल पहनी है। डर मत, नहीं तो हृदयाघात हो जायेगा। हम भी दिखावटी शेर हैं।''

हम सभी ऐसे ही दिखावटी शेर हैं। 'यह कर लूँगा, यह कर लूँगा...' लेकिन अंदर से धक-धक चलती है। जरा-सी प्रतिकूलता आती है तो डर जाते हैं। सुखद स्थिति आ जाय चाहे दुःखद स्थिति आ जाय, दोनों में विचलित न हों। दुःख पैरों तले कुचलने की चीज है और सुख बाँटने की चीज है। आप तो अपने परम ज्ञान में रहिये, परम पुरुष गुरु के तत्त्व में रहिये।

समझदार लोग परिस्थितियों से घबराते नहीं अपितु संतों से, सत्संग से सीख लेते हैं और सुख-दुःख का सदुपयोग करके बहुतों के लिए सुख, ज्ञान-प्रसाद व प्रकाश फैलाने में लगकर धनभागी होते हैं।

भगवान के ६४ दिव्य गुण

- पूज्य बापूजी

(गतांक से आगे)

भगवान का ४६वाँ गुण है 'नारीगणमनोहारी', भगवान चित्त चुरा लेते हैं। श्रीकृष्ण एक गोपी को बोलते हैं : 'तू अपने लाला को खोजती है ? मैं तेरा लाला हूँ...' उसका चित्त चुरा लिया, आपका-हमारा चित्त चुरा लिया। सत्संग में भगवान की बातें सुनने में आपको भूख-प्यास नहीं सताती, चित्त चुरा लेती हैं उनकी बातें। चितचोर हैं वे। ४७वाँ गुण है 'सर्वाराध्यः', भगवान सबके आराध्य हैं। ऐसी उनकी लीला और ऐसा उनका स्वभाव है कि उनकी आराधना किये बिना बुद्धिमान व भक्त-हृदय रुकेगा नहीं।

४८वाँ गुण है 'समृद्धिमान्', भगवान ऐश्वर्यशाली हैं। जैसे महाभारत में कथा आती है कि द्रौपदी के पात्र में शाक का एक पत्ता पड़ा था, भगवान ने वह खाया और ऋषि-मुनि बिना खाये तृप्त हो गये। ऐसा भगवान का ऐश्वर्य है और यह तुम्हारे में भी बीजरूप में छुपा है ! (पूज्य संत श्री आशारामजी बापू ने) साधकों को प्रसाद की बाल्टी दी और कहा, 'जाओ विद्यालय में प्रसाद बाँटो।' वे (साबरमती के दिलीप भाई, प्रधानाचार्य) विद्यालय में प्रसाद बाँटते-बाँटते थक गये, फिर प्रार्थना की तब रात को प्रसाद खत्म हुआ ! यह भगवान का ऐश्वर्य है।

भारतीय मनोविज्ञान से ही विश्व का मंगल

- पूज्य बापूजी

भारतीय मनोविज्ञान में शरीर और मन पर भोजन का क्या प्रभाव पड़ता है, इसकी चर्चा से लेकर शरीर में विभिन्न चक्रों की स्थिति, कुंडलिनी की स्थिति, वीर्य (कामशक्ति) को ऊर्ध्वगामी बनाने की प्रक्रिया आदि की चर्चा सूक्ष्मता से की गयी है।

(अंक २५५ से आगे)

जब पश्चिम के देशों में ज्ञान-विज्ञान का विकास प्रारम्भ ही नहीं हुआ था और मानव ने संस्कृति के क्षेत्र में प्रवेश भी नहीं किया था, उस समय भारतवर्ष के दार्शनिक और योगी मानव मनोविज्ञान के विभिन्न पहलुओं तथा समस्याओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहे थे। फिर भी पाश्चात्य विज्ञान की छत्रछाया में पले हुए और उसके प्रकाश की चकाचौंध से भ्रमित वर्तमान भारत के कुछ मनोवैज्ञानिक भारतीय मनोविज्ञान का अस्तित्व तक मानने को तैयार नहीं हैं, यह खेद की बात है!

भारतीय मनोवैज्ञानिकों ने चेतना के चार स्तर माने हैं : जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय। पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक प्रथम तीन स्तरों को ही जानते हैं। उनका मनोविज्ञान नास्तिकतावादी है। भारतीय मनोविज्ञान ही आत्मविकास और चरित्र-निर्माण में सबसे अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है क्योंकि यह धर्म से अत्यधिक प्रभावित है।

भारतीय मनोविज्ञान आत्मज्ञान और आत्म-सुधार में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होता है। इसमें बुरी आदतों को छोड़ने और अच्छी आदतों को अपनाने तथा मन की प्रक्रियाओं को समझने व उस पर नियंत्रण करने के महत्त्वपूर्ण उपाय बताये गये हैं। इसकी सहायता से मनुष्य सुखी, स्वस्थ और सम्मानित जीवन जी सकता है और जीते-जी परमात्म-साक्षात्कार भी कर सकता है।

यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः।...

'परमात्मा की प्राप्तिरूप जिस लाभ को प्राप्त होकर योगी उससे अधिक दूसरा कुछ भी लाभ नहीं मानता और परमात्मप्राप्तिरूप जिस अवस्था में स्थित वह बड़े भारी दुःख से भी चलायमान नहीं होता (उसको जानना चाहिए)।' (श्रीमद्भगवद्गीता : ६.२२)

पश्चिम की मनोवैज्ञानिक मान्यताओं के आधार पर विश्वशांति का भवन खड़ा करना बालू की नींव पर भवन-निर्माण करने के समान है। पाश्चात्य मनोविज्ञान का परिणाम पिछले दो विश्वयुद्धों के रूप में दिखायी

पड़ता है । यह दोष आज पश्चिम के मनोवैज्ञानिकों की समझ में आ रहा है । जबकि भारतीय मनोविज्ञान मनुष्य का दैवी रूपांतरण करके उसके विकास को आगे बढ़ाना चाहता है । उसके 'अनेकता में एकता' के सिद्धांत के आधार पर ही संसार के विभिन्न राष्ट्रों, वर्गों, धर्मों और प्रजातियों में सहिष्णुता ही नहीं, सक्रिय सहयोग उत्पन्न किया जा सकता है ।

भारतीय मनोविज्ञान में शरीर और मन पर भोजन का क्या प्रभाव पड़ता है, इसकी चर्चा से लेकर शरीर में विभिन्न चक्रों की स्थिति, कुंडलिनी की स्थिति, वीर्य (कामशक्ति) को ऊर्ध्वगामी बनाने की प्रक्रिया आदि की चर्चा सूक्ष्मता से की गयी है।

पाश्चात्य मनोविज्ञान मानव-व्यवहार का विज्ञान है । भारतीय मनोविज्ञान मानस विज्ञान के साथ-साथ आत्मविज्ञान है । भारतीय मनोविज्ञान इन्द्रिय-नियंत्रण पर विशेष बल देता है जबकि पाश्चात्य मनोविज्ञान केवल मानसिक क्रियाओं या मस्तिष्क-संगठन पर बल देता है। उसमें मन द्वारा मानसिक जगत का ही अध्ययन किया जाता है। उसमें भी फ्रायड का मनोविज्ञान तो एक रुग्ण मन के द्वारा अन्य रुग्ण मनों का ही अध्ययन है जबकि भारतीय मनोविज्ञान में इन्द्रिय-निरोध से मनोनिरोध और मनोनिरोध से आत्मसिद्धि को ही लक्ष्य मानकर अध्ययन किया जाता है। पाश्चात्य मनोविज्ञान में मानसिक तनावों से मुक्ति का कोई समुचित साधन परिलक्षित नहीं होता जो किसीके व्यक्तित्व में निहित निषेधात्मक परिवेशों का स्थायी उपचार प्रस्तुत कर सके। इसलिए फ्रायड के लाखों बुद्धिमान अनुयायी भी पागल हो गये।

'सम्भोग से समाधि' के मार्ग पर चलकर कोई भी व्यक्ति योगसिद्ध महापुरुष नहीं हुआ । उस मार्ग पर चलनेवाले पागल हुए हैं। ऐसे कई नमूने हमने (संत श्री आशारामजी बापू ने) देखे हैं। इसके विपरीत भारतीय मनोविज्ञान में मानसिक तनावों से मुक्ति के विभिन्न उपाय बतलाये गये हैं, जैसे - योगमार्ग, साधन-चतुष्टय, शुभ संस्कार, सत्संगति, अभ्यास, वैराग्य, ज्ञान, भक्ति, निष्काम कर्म आदि। इन साधनों के नियमित अभ्यास से संगठित एवं समायोजित व्यक्तित्व का निर्माण सम्भव है। इसलिए भारतीय मनोविज्ञान के अनुयायी पाणिनि मुनि और महाकवि कालिदास जैसे प्रारम्भ में अल्पबुद्धि होने पर भी महान विद्वान हो गये। भारतीय मनोविज्ञान ने इस विश्व को हजारों महान भक्त, समर्थ योगी तथा ब्रह्मज्ञानी महापुरुष दिये हैं। अतः पाश्चात्य मनोविज्ञान को छोड़कर भारतीय मनोविज्ञान का आश्रय लेने में ही व्यक्ति, कुटुम्ब, समाज, राष्ट्र और विश्वमानव का कल्याण निहित है। (आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'यौवन सुरक्षा भाग-२' से क्रमशः)

ऐसा हो विश्वास-सम्पादन

- पूज्य बापूजी

आपका व्यवहार ऐसा होना चाहिए कि आपकी पत्नी का आप पर बड़ा भरोसा हो। आपके पति का आप पर ऐसा विश्वास होना चाहिए कि कोई बोले, 'तुम्हारी पत्नी ऐसी थी, ऐसी थी... मैंने फलाने के साथ देखा।' तो पति बोल पड़े, 'किसी और को देखा होगा, मेरी पत्नी ऐसी नहीं हो सकती।' पत्नी को पति के विश्वास का सम्पादन करना चाहिए और पति को पत्नी के विश्वास का सम्पादन करना चाहिए तभी गृहस्थ-जीवन में कुछ निखार आता है। ऐसे ही पिता, पुत्र, माँ, बेटी तथा परिवार के अन्य सदस्यों को भी आपस में विश्वास-सम्पादन करना चाहिए।

समझ बिगड़ी तो सब बिगड़ा

- पूज्य बापूजी

गुजराती भाषा में एक कहावत है :

चा बगड़ी तो सवार बगड़ी, शाक बगड्युं तो दिवस बगड्यो, अथाणुं बगड्युं तो वर्ष बगड्युं, अने बैरूं बगड्युं तो आखी जिंदगी बगड़ी।

अर्थात् चाय बिगड़ी तो सवेरा बिगड़ा, सब्जी बिगड़ी तो दिवस बिगड़ा, अचार बिगड़ा तो पूरा वर्ष बिगड़ा और पत्नी बिगड़ी तो सारी जिंदगी बिगड़ी। यह पुरानी कहावत है।

मैं कहता हूँ कि मेरी एक बात और मिला दो, अगर समझ बिगड़ी तो ८४ लाख जन्म बिगड़े और समझदारी नहीं बिगड़ी तो कुछ भी नहीं बिगड़ा।

संत तुकारामजी महाराज की पत्नी उठते भी गाली, बैठते भी गाली देती और कभी-कभी डंडा भी मार देती फिर भी उनका कुछ भी नहीं बिगड़ा।

संत तुकारामजी भगवान विट्ठल से कहते हैं : ''मेरे विट्ठला ! तुम्हारी अपार कृपा है । मैं कितना-कितना वर्णन करूँ ! झगड़ालू पत्नी देकर तो आपने मुझे बचा लिया है । अब दिन-रात आपका भजन करने में मन लगता है । अगर पत्नी झगड़ालू नहीं होती तो मैं शायद इतना भक्त भी नहीं बन सकता था ।''

संत एकनाथजी महाराज की पत्नी तो जितनी देखने में देवी थी, उतनी गुणों में भी देवी थी, नम्र थी और पति के अनुकूल रहनेवाली महान नारी थी । एकनाथजी बोलते हैं : ''हे विट्ठल ! मेरे अनुकूल पत्नी देकर तुमने मेरे को निश्चिंत कर दिया और निश्चिंत होने के कारण मेरा मन तुममें लगा है, यह तुम्हारी कृपा है ।''
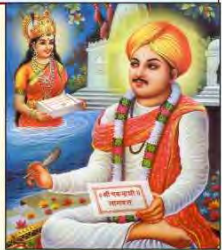
संत नरसिंह मेहता की पत्नी का स्वर्गवास हो गया था । वे कहते हैं : ''दो चूड़ियाँ होती हैं तो खटपट होती है, आपने एक चूड़ी को अपने चरणों में बुलाकर मुझे निरंजन नारायण की भक्ति का अवसर दिया है ।'' ऐसा नहीं कि 'हाय रे हाय ! अब मेरा क्या होगा? तेरे बिना भी क्या जीना...' छाती कूटने नहीं लग गये थे।

परिस्थितियाँ कैसी भी आयें लेकिन आप उनकी समीक्षा करते हैं या नहीं ? एक होती है प्रतीक्षा दूसरी होती है समीक्षा । प्रतीक्षा अप्राप्त वस्तु की होती है, समीक्षा प्राप्त वस्तु की होती है । ईश्वर की कृपा सदा प्राप्त है और तुम्हारा ईश्वर भी तुम्हारे को सदा प्राप्त है । प्रतीक्षा की कोई जरूरत नहीं है, केवल समीक्षा कीजिये, अपना कल्याण कर लीजिये ।

ऐसा महान अपना स्वरूप है !

जैसे दो पुरुषों के झगड़े में साक्षी पुरुष को उनकी हानि-लाभ में किंचित् भी कर्तव्य नहीं होता, उसी प्रकार सुख-दुःख आदि के साक्षी हम चैतन्य आत्मा को सुख-दुःख की प्राप्ति-निवृत्ति संबंधित किंचिन्मात्र भी कर्तव्य नहीं।

ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों ने मानव-समाज को ऐसे-ऐसे खजाने दे रखे हैं कि संसार के हीरे-मोतियों के खजानों का मूल्य उनके आगे कंकड़-पत्थर जितना भी नहीं है। काली कमली वाले बाबा द्वारा रचित 'पक्षपातरहित अनुभवप्रकाश' ग्रंथ जो 'आध्यात्मिक विष्णु पुराण' के नाम से भी जाना जाता है, यह वह सद्ग्रंथ है जिसमें अपने परम आनंदमय आत्मस्वरूप के ज्ञान को खुले रूप में मानवमात्र को दिया गया है। यह सद्ग्रंथ पूज्य बापूजी को परम प्रिय है और पूज्यश्री ने यह ज्ञानामृत 'ऋषि प्रसाद' के माध्यम से अपने आत्मीय मानवमात्र तक पहुँचाने का निर्देश दिया था। इसे उन्हींका प्रसाद मानकर हम प्राशन करेंगे -

महर्षि पराशरजी शिष्य मैत्रेय को अपने स्वरूप का वर्णन संतों की स्थिति के माध्यम से बताते हुए कहते हैं कि वामदेव आदि संतों ने ध्रुव को कहा : ''काम-क्रोधादिरूप भी हम ही स्वप्नद्रष्टारूप हैं तथा काम-क्रोध से रहित उनके साक्षीरूप भी हम ही हैं। अमानित्व आदि दैवी गुण तथा दम्भ आदि आसुरी गुणरूप भी हम ही हैं और इनसे रहित इनका साक्षीरूप असंगी हम ही चैतन्य हैं। ज्ञान-अज्ञान, शुभ-अशुभ आदि सर्व द्वन्द्वरूप स्वप्न हम ही हैं तथा इनसे रहित इनका द्रष्टारूप भी हम ही स्वप्नद्रष्टा हैं। स्वप्न में ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि मूर्तिरूप होकर भी हम स्वप्नद्रष्टा असंग, निर्विकार इनके प्रकाशक चैतन्य साक्षीभूत हैं।

जीव-ईश्वररूप हम चैतन्य जीव-ईश्वर भाव से रहित हैं। आत्मा-अनात्मा भेद सहित भी हम चैतन्य इस भेद से रहित हैं। कायिक, वाचिक, मानसिक सर्व चेष्टा करते भी हम चैतन्य अकर्ता हैं। स्फुरणरूप भी हम चैतन्य वास्तव में अस्फुरणरूप हैं। माया से महाकर्ता, महाभोक्ता, महात्यागी हम चैतन्य आत्मा वास्तव में अकर्ता, अभोक्ता, अत्यागी हैं। सर्व देश, काल, वस्तुरूप भी हम पूर्ण चैतन्य आत्मा वास्तव में देश, काल, वस्तु से तथा इनके भेद से रहित हैं। धर्म-अधर्मरूप भी हम चैतन्य वास्तव में धर्म-अधर्म से रहित हैं। सुख-दुःखरूप भी हम अनंत आत्मा वास्तव में सुख-दुःख से रहित हैं।

हम चैतन्य ही इस मन आदि जड़ जगत की चेष्टा कराते हैं, जैसे तंत्री पुरुष जड़ पुतलियों की चेष्टा कराते हैं। हम चैतन्य आधाररहित भी सर्व के आधार हैं। हम चैतन्य ही सर्व मन आदि नाम-रूपमय जगत के प्रकाशक, द्रष्टा, अधिष्ठान हैं। हम चैतन्य का प्रकाशक, द्रष्टा, अधिष्ठान कोई नहीं। **(शेष पृष्ठ २८ पर)**

किसके जीवन का अंत कैसा ?

- पूज्य बापूजी

'खाया-पिया और मजे से जियेंगे, गुरु-वुरु कुछ नहीं है...', ऐसे लोगों को विषयी बोलते हैं। विषयी व्यक्तियों के जीवन का अंत कैसे होता है ? बोले : अतृप्ति, असफलता, पाप के संग्रह में तथा दुःख, चिंता और निराशा की आग और अफसोस से समाप्त हो जाता है निगुरे लोगों का जीवन । और जिनको गुरुदीक्षा मिलती है उनका जीवन कैसा होता है ?

गुरुरेव परं ब्रह्म गुरुरेव परा गतिः ।
गुरुरेव परा विद्या गुरुरेव परं धनम् ॥

'गुरु ही परम ब्रह्म हैं, गुरु ही परा गति हैं, गुरु ही परा विद्या हैं और गुरु को ही परम धन कहा गया है ।' (द्वयोपनिषद् : ५)

गुरु ही सर्वोत्तम अविनाशी तत्त्व हैं, परम आश्रय-स्थल हैं तथा परम ज्ञान के उपदेष्टा होने के कारण गुरु महान होते हैं । और जो गुरु की शरण लेते हैं वे 'अ-महान' कैसे होंगे? वे कीट-पतंग की योनि में क्यों जायेंगे ? वे हाथी-घोड़ा, चूहा-बिल्ला क्यों बनेंगे ?

राजा नृग गिरगिट बन गये । राजा अज बुद्धिमान थे लेकिन मरने के बाद साँप बन गये । अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन मानवतावादी थे, मैं उनको प्यार भी करता हूँ । उनकी प्रसिद्धि करनेवाली संस्थाओं में मुझे ले गये, मैं देख के भी आया । लेकिन अभी वे बेचारे व्हाइट हाउस में प्रेत होकर घूम रहे हैं क्योंकि गुरु बिना का जीवन था। तो यह उपनिषद् की बात सार्थक व सच्ची नजर आती है ।

वे लोग अकाल मर जाते हैं जो असंयमी हैं, अकाल विफल हो जाते हैं जो आवेशी होते हैं। वे अकारण ही तपते रहते हैं जो ईर्ष्यालु होते हैं । वे अकारण ही फिसलते रहते हैं जो अति लोभी होते हैं । वे अकारण ही उलझते रहते हैं जो तृष्णावान हैं । जो अशिष्ट और आलसी हैं, वे संसार से हारकर कई नीच योनियों को पाते हैं लेकिन जिनमें संयम है, शांति है, ईर्ष्या और लोभ का अभाव है, तृष्णा, निष्ठुरता, अशिष्टता और आलस्य का अभाव है, वे गुरु-तत्त्व के माधुर्य में, आनंद में और साक्षात्कार में सफल हो जाते हैं ।

(पृष्ठ २७ का शेष) इसीसे हम चैतन्य स्वयंप्रकाशरूप हैं। भूत, भविष्य, वर्तमान- तीनों कालों के तथा तीनों कालों में विद्यमान पदार्थों के हम चैतन्य ही सिद्धकर्ता हैं। हमारे चैतन्यस्वरूप में ज्ञान-अज्ञान नहीं । जैसे सूर्य में दिन-रात नहीं उलटा सूर्य से ही दिन-रात्रि की सिद्धि होती है, उसी प्रकार ज्ञान-अज्ञान की हम चैतन्य से ही सिद्धि होती है ।

जैसे दो पुरुषों के झगड़े में साक्षी पुरुष को उनकी हानि-लाभ में किंचित् भी कर्तव्य नहीं होता, उसी प्रकार सुख-दुःख आदि के साक्षी हम चैतन्य आत्मा को सुख-दुःख की प्राप्ति-निवृत्ति संबंधित किंचिन्मात्र भी कर्तव्य नहीं ।''

('आध्यात्मिक विष्णु पुराण' से)

(पृष्ठ २१ 'सत्य का...' का शेष) इतना दृढ़मूल है कि हम ईश्वर, समाधि अथवा मोक्ष की प्राप्ति के द्वारा भी अपने व्यक्तित्व को ही आभूषित करना चाहते हैं । परंतु सत्य का साक्षात्कार व्यक्तित्व का भूषण नहीं है, वह व्यक्त और अव्यक्त के भेद को सर्वथा निरस्त कर देता है ।

अतः श्रुति, शास्त्र, सत्सम्प्रदाय एवं सद्गुरुओं का यह कहना है कि अपने को दृश्य की किसी कक्षा की कुक्षि में मत बाँधो । जो अदृश्य, अग्राह्य है, अमृत है, अविज्ञात है, अदृश्य-द्रष्ट है, उस निर्विवाद सत्य की उपलब्धि ही राग-द्वेष की आत्यंतिक निवर्तक है ।

सत्संग-श्रवण, मनन और निदिध्यासन हवाई जहाज की यात्रा के समान हैं, जो परमात्मप्राप्ति के लक्ष्य तक जल्दी पहुँचा देते हैं।

अविस्मरणीय यादें

जीव को ब्रह्म बनाने का विश्वविद्यालय

भगवत्पाद सद्गुरुदेव साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज की आज्ञा से पूज्य बापूजी ने संवत् २०२८ में गुरुपूर्णिमा अर्थात् ८ जुलाई १९७१ को अहमदाबाद की धरती पर चरण रखे। आश्रम स्थापना के बारे में पूज्य बापूजी बताते हैं : ''हम वाड़ज (अहमदाबाद) में सत्संग करने के लिए आये थे। शहरी माहौल से हमारा चित्त ऊब गया था, इसलिए इधर घूमने के लिए आये थे। यहाँ आते ही हमारे चित्त में कुछ विलक्षण एहसास हुआ। हमने समितिवालों से कहा कि 'यहाँ एक कुटिया बना दें तो कैसा रहेगा ?'

उन्होंने कहाः ''बापूजी ! जरूर बननी चाहिए।'' मोक्ष कुटीर बनाने के कार्य में मजदूरों के साथ हम भी लगे थे। लगभग १५ साल तो हम मोक्ष कुटीर में रहे।''

'मौनी अमावस्या' के दिन संवत् २०२८ अर्थात् सन् १९७२ में मोक्ष कुटीर तैयार हुआ था। इस आश्रम की महत्ता बताते हुए पूज्य बापूजी कहते हैंः ''यहाँ पूर्वकाल में जाबल्य ऋषि ने तपस्या की थी। यहाँ पिछले ४३ साल से ध्यान-भजन चल रहा है। कितना भी अशांत व्यक्ति इधर आश्रम के माहौल में आता है तो उसके चित्त में यहाँ की आध्यात्मिक आभा का, ध्यानयोग का, भक्तियोग का कुछ-न-कुछ सात्त्विक एहसास होने लगता है। इस

जब तक आत्मज्ञान का सत्संग नहीं मिलता है, आत्मज्ञानी गुरु की कृपा हजम नहीं होती है, तब तक आत्मानुभव नहीं हो सकता ।

भूमि में आत्मसुख को जगाने की आभा है।''

करीब ३०-३५ वर्ष पूर्व कुछ पर्यटक अहमदाबाद आश्रम में आये थे। आश्रम के एकांत और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण वातावरण से प्रभावित हुए बिना वे नहीं रह सके। उन्होंने पूज्य बापूजी से पूछा : ''यहाँ क्या प्रवृत्ति होती है ?'' पूज्यश्री बोले : ''त्रिकाल संध्या होती है। ध्यान-भजन होता है।''

उन्होंने आश्चर्य से पूछा : ''इतनी सुंदर जगह ! क्या यहाँ कुछ प्रवृत्ति नहीं होती ?''

तब पूज्यश्री ने कहा : ''यहाँ जीव को अपने ब्रह्मस्वभाव में जगाने का विश्वविद्यालय चलता है!''

पूज्य बापूजी के कल्याणकारक मार्गदर्शन में आश्रम द्वारा लोक-कल्याण की अनेकानेक सत्प्रवृत्तियाँ चलायी जा रही हैं, जिनसे समाज के विभिन्न वर्गों के असंख्य लोग लाभान्वित हो रहे हैं। इस आश्रमरूपी विशाल वटवृक्ष की शाखाएँ भारत के शहरों-गाँवों तक ही नहीं, केवल विदेशों तक ही नहीं बल्कि करोड़ों हृदयों तक फैल चुकी हैं।

इस महान तपोभूमि, तीर्थभूमि के ४३वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में २० जनवरी को अहमदाबाद आश्रम में 'श्री आशारामायण' का सामूहिक पाठ, पादुका-पूजन, पूज्यश्री के दुर्लभ सत्संग, भजन-कीर्तन, प्रार्थना आदि कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। ४०-४५ वर्षों से पूज्यश्री के सान्निध्य से लाभान्वित हो रहे साधकों ने अपने अनुभव बताये। सभी साधकों ने पूज्य बापूजी से करुण भाव से प्रार्थना कीः 'हे गुरुवर ! आपके बिना सब सूना है। हम बच्चों के लिए ही सही, अब तो आश्रम जल्दी आ जाइये !'

गुरु का बंधन परम स्वतंत्रता है - पूज्य बापूजी

गुरु और भगवान का बंधन, बंधन नहीं है; वह तो प्रेम से, धर्म से, स्वयं अपनी मर्जी से स्वीकारा गया ज्ञान-प्रकाशदायी अनुशासन है। विकारों के बंधन से छूटने के लिए शास्त्र, गुरु और भगवान के बंधन में रहना हजारों स्वतंत्रताओं से ज्यादा हितकारी है।

मैं गुरु के बंधन में रहा। दाढ़ी-बाल तब छँटवाता जब गुरुजी की आज्ञा आती, ऐसा बंधन मैंने स्वयं स्वीकार किया था। सत्य का बंधन स्वीकार किया, वह बाँधता नहीं मुक्त कर देता है। अगर गुरुजी की कृपा का बंधन मैं स्वीकार नहीं करता और उनकी आज्ञा का उल्लंघन कर देता तो मैं विकारों के बंधन में आ जाता लेकिन उनकी आज्ञा का पालन किया तो करोड़ों लोगों की सेवा करने में गुरु महाराज मुझे सफल कर रहे हैं, निमित्त बना रहे हैं। यह प्रत्यक्ष है।

मैंने बंधन स्वीकार किया लेकिन बंधन रहा नहीं, हृदय में मुक्तात्मा गुरु प्रकट हो गये। तो गुरु की आज्ञा पालना यह बंधन नहीं है, सारे बंधनों से मुक्त करनेवाला तोहफा है। गुरु की अधीनता को छोड़कर चल दिये तो वे स्वतंत्र नहीं हैं, महापराधीन हैं, मन व इन्द्रियों के विकारों के अधीन हो जाते हैं। जिन्हें सद्गुरु मिले हैं वे परम स्वतंत्रता का राजमार्ग पा चुके हैं, उन्हें बधाई हो !

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी उत्तरायण पर्व पर अहमदाबाद आश्रम में 'राष्ट्रीय ऋषि प्रसाद सम्मेलन' सुसम्पन्न हुआ। देशभर से आये साधकों व सेवादारों ने अपने अनुभव बताये और पूरे उत्साह के साथ सुप्रचार-सेवा में लगकर 'ऋषि प्रसाद' के माध्यम से समाज तक सच्चाई और अच्छाई पहुँचाने का संकल्प लिया। इस दिन आयोजित हुए संत-सम्मेलन में संतों ने इस आध्यात्मिक पत्रिका की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

असली शिष्य तो वे ही हैं

- महंत हरिदासजी महाराज वैष्णव सम्प्रदाय, दिगम्बर अखाड़ा (अयोध्या)

जैसे रामजी को हनुमानजी की वानरसेना की कोई आवश्यकता नहीं थी परंतु भगवान ने अवसर दिया उनको सेवा करके भाग्य बनाने का। ऐसे ही हम सेवा करते हैं तो अपना भाग्य बनाने के लिए करते हैं और जो इस घोर कुप्रचार में सेवा कर रहे हैं, असली शिष्य तो वे ही हैं।

समस्त ग्रंथों का सार है 'ऋषि प्रसाद'

- अवधूत महामंडलेश्वर श्री स्वात्मबोधानंद पुरीजी, निरंजनी अखाड़ा

प्रातःस्मरणीय, परम श्रद्धेय, अर्चनीय, वंदनीय, श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ, संतशिरोमणि परम पूज्य आशारामजी बापू के श्रीचरणों में बारम्बार प्रणाम!

पूज्य बापूजी के द्वारा एक नहीं, सेवाकार्यों के अनेकानेक प्रकल्प तैयार किये गये। लाखों वर्षों के बाद भगवान शिवजी के बाद यदि विश्व में घर-घर तुलसी रोपण व पूजन करने-कराने की प्रेरणा यदि किन्हीं महापुरुष ने दी है तो वे हैं परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू! तुलसीजी के प्रति सम्मान, श्रद्धा सभी ऋषियों व संतों के हृदय में रही है पर पूज्य बापूजी ने तो एक अभियान के रूप में २५ दिसम्बर को 'तुलसी पूजन दिवस' घोषित कर तुलसी-पूजन सुचारु रूप से करवाया।

पूज्य बापूजी दिव्य दृष्टिवाले महापुरुष हैं। अब सम्पूर्ण गीता-भागवत, सम्पूर्ण रामायण, उपनिषद् आदि का युग-अनुकूल सरल भाषा में अमृतपान कराने के लिए उन्होंने उन समस्त ग्रंथों के तेज, सार को एक ग्रंथ के रूप में पिरोकर समाज के हाथ में दिया, उसीका नाम है 'ऋषि प्रसाद'।

महापुरुषों की जीवनियाँ, पुण्यदायी तिथियाँ तथा नैतिक, धार्मिक, पौराणिक, सामाजिक, आध्यात्मिक एवं आयुर्वेद की शिक्षा तथा साधना करने की शिक्षा - ये सब-के-सब ऋषि प्रसाद में उपलब्ध हैं। मेरी दृष्टि में 'ऋषि प्रसाद' एवं 'ऋषि दर्शन' बापूजी के द्वारा दुनिया को दिया गया बहुत बड़ा उपहार है।

महंत श्री विनोद कुमारजी, संत केशवदास दरबार (अहमदाबाद) : निश्चय ही जल्दी ही बापूजी हमारे बीच में होंगे। कोई शक्ति उनको रोक नहीं सकती। 'पूज्य बापूजी हमारे समक्ष बैठे हैं। उनके वचनामृत हम ग्रहण कर रहे हैं।...' क्या विहंगम दृश्य होगा ! क्या आनंद की स्थिति होगी! मात्र सोचने से मन, हृदय आनंद से सराबोर हो जाता है।

श्री घनश्यामानंदजी, अध्यक्ष, वैदिक डिवाइन एसोसिएशन : जैसे भागवत भगवान श्रीकृष्ण का रूप है, ऐसे ही ऋषि प्रसाद बापूजी का रूप है, वाङ्मयी मूर्ति है। ऋषि प्रसाद में गुरुभक्ति है, गोविंद भी हैं, गीता, गंगा और गौसेवा भी है। इसमें सब कुछ आ गया। उत्तरायण पर्व आध्यात्मिक डीवीडी मैगजीन 'ऋषि दर्शन' की जयंती है।

हम आशा छोड़ नहीं सकते

हम आशा छोड़ नहीं सकते, बापूजी जल्दी आयेंगे ।
ये आँखें ढूँढ़ रहीं गुरुवर, दर्शन जल्दी पायेंगे ।।
बापूजी जल्दी आयेंगे, यही इक आस रहती है ।
गुरु का दर्शन पायेंगे, यही इक प्यास रहती है ।।
ये विनती सुन लीजो गुरुवर, तुम बिन रह ना पायेंगे ।
जमाना चाहे कुछ कर ले, बापूजी जल्दी आयेंगे ।।
तेरे बिना कहीं जी ना लगदा ।
तुम बिन किसको करूँ मैं सजदा ।।
बादल बन के आँसू बरसे, नैना तेरे दरस को तरसे ।
बालक करें पुकार, गुरुजी आ जाओ इक बार ।।
ये आँखें ढूँढ़ रहीं गुरुवर, दर्शन जल्दी पायेंगे ।
तुम सा ना कोई भी होगा, होगा तो रब ही तो होगा ।।
हमको तो यूँ छोड़ न जाओ, तुम बिन मेरा कोई नहीं है ।
बच्चे करें पुकार गुरुजी आ जाओ इक बार ।।
ये आँखें ढूँढ़ रहीं गुरुवर, दर्शन जल्दी पायेंगे ।
तुम पिता मैं बालक तेरा, तुमसे ही ये जीवन मेरा ।।
किसके भरोसे हमें छोड़ के चले गये तुम ।
रो-रो करें पुकार, बापूजी आ जाओ इक बार ।।
ये आँखें ढूँढ़ रहीं गुरुवर, दर्शन जल्दी पायेंगे ।
हार चुके हैं हम तो गुरुवर, तुम सक्षम हो हे मेरे ईश्वर !
कोई करिश्मा कर दो भगवन्, नाम तुम्हारा दुःखहर्ता है ।
विनती करो स्वीकार, बापूजी आ जाओ इक बार ।।
ये आँखें ढूँढ़ रहीं गुरुवर...

– तोरण जयसवाल (भोला), अहमदाबाद

मिला युवा वैज्ञानिक पुरस्कार

मैंने २००८ में पूज्य बापूजी से सारस्वत्य मंत्र की दीक्षा ली थी। मंत्रजप से मेरी स्मरणशक्ति और बौद्धिक क्षमता में अद्भुत विकास हुआ। मैं रोज रात को जप तथा बापूजी से प्रार्थना करके सोता था अतः स्नातक के तीनों वर्षों में परीक्षा-परिणाम आने से पहले ही उसके बारे में बापूजी सपने में आकर बता देते थे। मैंने रसायन शास्त्र से एम.एससी. की है और अभी पीएच.डी. कर रहा हूँ। जुलाई २०१२ में पूज्य गुरुदेव ने रायपुर (छ.ग.) के सत्संग-कार्यक्रम में मुझे वैज्ञानिक बनने का आशीर्वाद और एक मंत्र दिया। मैंने श्रद्धा से उसका जप शुरू कर दिया।

उसके बाद बापूजी की कृपा से दिसम्बर २०१४ में इंडियन केमिकल्स सोसायटी की तरफ से मुझे यंग साइंटिस्ट अवार्ड (युवा वैज्ञानिक पुरस्कार) मिला।

बापूजी ने हम साधकों को जो आनंद, ज्ञान, शांति दी है, उसे ये निगुरे कुप्रचारक क्या जानें ? मैं 'युवा सेवा संघ' का सदस्य हूँ और इसके माध्यम से पूज्य बापूजी द्वारा चलाये जा रहे समाज-उत्थान के विभिन्न सेवाकार्यों में सहभागी बनने का अवसर पाकर अपने को धन्य समझता हूँ। गुरुदेव के सान्निध्य में आने व सेवा करने से मेरे जीवन में सद्गुणों एवं ज्ञान का खूब-खूब विकास हुआ है। ऐसे सामर्थ्य के धनी ऋषिवर पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में दंडवत् प्रणाम !

– अरविंद कुमार साहू, दुर्ग (छ.ग.)
सचल दूरभाष : ९९८११३२३०७

****

करिश्मा-ए-बाबा आशाराम बापू

'सच्चा लेखन' समाचार पत्र की रिपोर्टिंग

आशारामजी बापू को जाँच हेतु एम्स ट्रॉमा सेंटर, दिल्ली ले जाया गया था। बाबा के रेलवे स्टेशन पहुँचने पर वहाँ पर कई हजार भक्त इकट्ठे हो गये। यह विचारणीय विषय है कि इतना कड़ा आरोप लगने के बाद भी आखिर बाबा को भक्त क्यों नहीं छोड़ रहे हैं ? क्या वाकई बाबा किसी विदेशी या राजनैतिक षड्यंत्र के शिकार हो रहे हैं ? जोधपुर जेल, न्यायालय परिसर, एम्स अस्पताल, रेलवे स्टेशन आदि स्थानों पर उपस्थित विभिन्न क्षेत्रों से आये बाबा के भक्तों व बाबा के विरोधियों से 'सच्चा लेखन' समाचार पत्र की टीम रू-बरू हुई। प्रस्तुत हैं उनके साथ हुई बातचीत के कुछ अंश :

भक्तों से प्रश्न : ''इतना गम्भीर आरोप लगने के बावजूद आप बाबा को क्यों मानते हैं ? क्या बाबा ने आपको कुछ दिया है ?''

उत्तर : ''आज से पहले भी बापूजी पर कितने ही आरोप लगे पर क्या कोई भी सत्य साबित हुआ? ऐसे ही यह भी एक मनगढ़ंत आरोप है, उन्हें फँसाया जा रहा है। बापूजी ने कभी नहीं कहा, 'आप मेरी पूजा करो।' उन्होंने तो हमें दीक्षा भी भगवान के नाम की दी। बापूजी ने ही तो हमें भगवान का महत्त्व समझाया है। इसलिए हमारे लिए पहले बापूजी हैं फिर भगवान !''

प्रश्न : ''आपको ऐसा क्यों लगता है कि बाबा को कोई फँसाना चाहता है ? वह कौन है और क्यों फँसाना चाहता है ?''

उत्तर : ''क्योंकि पाश्चात्य कल्चरवाले बीड़ी, सिगरेट, पान-मसाला, मांसाहार, शराब आदि अनेकों माध्यमों से भारतवासियों को अपना गुलाम बनाकर भारत की नींव को कमजोर करना चाहते हैं। बापूजी ने समाज को इनकी हकीकत समझाकर जागृत कर दिया। इसलिए इन्होंने हमारे बापूजी के कुप्रचार पर खर्च करना शुरू कर दिया।''

विरोधियों से प्रश्न : ''आपको ऐसा क्यों लगता है कि बाबा रेप के आरोपी हैं ? आप क्यों विरोध करते हैं ? क्या आपके साथ भी कभी कुछ गलत हुआ है ?''

उत्तर : ''नहीं, हमने तो बस सुना है और आशाराम बापू पर पहले भी कई आरोप लग चुके हैं। बाकी वास्तविकता तो हमने कुछ नहीं देखी।''

प्रश्न : ''क्या आप कोई नशा करते हैं ?''

उत्तर : ''हम तो प्रतिदिन नशा करते हैं लेकिन आपको इससे क्या मतलब ?''

हमारे समक्ष ऐसे कितने ही बाबा और संत आये, जिन पर किसी प्रकार का कोई आरोप लगा तो उनके समस्त क्रियाकलाप रुक गये और उनके समर्थकों ने उनसे मुँह मोड़ लिया। पर यह बात वास्तव में आश्चर्यजनक है कि इतने गम्भीर आरोपों के बावजूद भी बापू आशारामजी के समर्थक उनका साथ छोड़ने का नाम नहीं ले रहे हैं !

****

औषधीय गुणों से भरपूर : सहजन

सहजन (मुनगा) की फली खाने में मधुर, कसैली एवं स्वादिष्ट तथा पचने में हलकी, गरम तासीरवाली एवं जठराग्नि प्रदीप्त करनेवाली होती है। इसके फूल तथा कोमल पत्तों की सब्जी बनायी जाती है। सहजन कफ तथा वायु शामक होने से श्वास, खाँसी, जुकाम आदि कफजन्य विकारों तथा आमवात, संधिवात, सूजनयुक्त दर्द आदि वायुरोगों में विशेष पथ्यकर है। यकृत एवं तिल्ली वृद्धि, मूत्राशय एवं गुर्दे की पथरी, पेट के कृमि, फोड़ा, मोटापा, गंडमाला (कंठमाला), गलगंड (घेघा) - इन व्याधियों में इसका सेवन हितकारी है। सहजन में विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। आयुर्वेद के मतानुसार सहजन वीर्यवर्धक तथा हृदय एवं आँखों के लिए हितकर है।

औषधीय प्रयोग

* सहजन की पत्तियों के ३० मि.ली. रस में १ चम्मच शहद मिलाकर रात को सोने से पूर्व २ माह तक लेने से रतौंधी में लाभ होता है। यह प्रयोग सर्दियों में करना हितकर है।

* लौह तत्त्व की कमी से होनेवाली रक्ताल्पता (एनीमिया) व विटामिन 'ए' की कमी से होनेवाले अंधत्व में पत्तियों की सब्जी (अल्प मात्रा में) लाभकारी है।

* पत्तों को पानी में पीसकर हलका गर्म करके जोड़ों पर लगाने से वायु की पीड़ा मिटती है।

* सहजन के पत्तों का रस लगाकर सिर धोने से बालों की रूसी में लाभ होता है।

सावधानी : सब्जी के लिए ताजी एवं गूदेवाली फली का ही प्रयोग करें। सूखी, बड़े बीजवाली एवं ज्यादा रेशेवाली फली पेट में अफरा करती है। गरम (पित्त) प्रकृति के लोगों के लिए तथा पित्तजन्य विकारों में सहजन निषिद्ध है। सहजन की पत्तियों का उपयोग पित्त-प्रकृतिवाले व्यक्ति वैद्यकीय सलाह से करें। गुर्दे की खराबी में इसका उपयोग नहीं करना चाहिए।

गोझरण अर्क

लाभ : कफ के रोग (सर्दी, खाँसी आदि), जुकाम, वायु व पेट के रोग, गैस, अग्निमांद्य, घुटनों का दर्द, अजीर्ण, अफरा, संग्रहणी, लीवर के रोग, पीलिया, बहुमूत्रता, जोड़ों का दर्द, गठिया, बदन दर्द, कृमि, बच्चों के रोग आदि में लाभकारी। सेवन-विधि : खाली पेट १० मि.ली. अर्क में २५ से ३० मि.ली. पानी मिलाकर ही लें।

गोझरण वटी

लाभ : कफ तथा वायु के रोग, लीवर व पेट के रोग, गैस, अग्निमांद्य, घुटनों व बदन का दर्द, अजीर्ण, अफरा, संग्रहणी, पीलिया, बहुमूत्रता, जोड़ों का दर्द, गठिया, पेट के कृमि आदि में उपयोगी।

****

कफ सिरप,

लाभ : सभी प्रकार के श्वासनली के विकार, सर्दी, खाँसी, दमा तथा सूखी खाँसी में लाभकारी। बच्चों व बड़ों सभीके लिए उपयोगी।

सरल घरेलू उपचार

हृदय के लिए हितकर पेय

रात को भिगोये हुए ४ बादाम सुबह छिलका उतारकर १० तुलसी पत्तों और ४ काली मिर्च के साथ अच्छी तरह पीस लें। फिर आधा कप पानी में इनका घोल बना के पीने से विभिन्न प्रकार के हृदयरोगों में लाभ होता है। इससे मस्तिष्क को पोषण मिलता है व रक्त की वृद्धि भी होती है।

जोड़ों का दर्द मिटायें, पुष्टि पायें

१००-१०० ग्राम हल्दी, मेथी व सोंठ का चूर्ण और ५० ग्राम अश्वगंधा चूर्ण सभीको मिलाकर रख लें। २ ग्राम चूर्ण सुबह-शाम भोजन के १ घंटा बाद गुनगुने पानी के साथ लें। इससे जोड़ों का दर्द, गठिया, कमरदर्द व अन्य वात रोगों में लाभ होता है एवं शरीर पुष्ट होता है।

गतांक की वर्ग-पहेली 'दिमागी कसरत' के उत्तर

(१) ज्येष्ठ (२) भाद्रपद (३) माघ (४) फाल्गुन (५) श्रावण (६) वैशाख (७) आश्विन (८) पौष (९) मार्गशीर्ष (१०) आषाढ़ (११) कार्तिक (१२) चैत्र

****

दंतमंजन लाल,

लाभ : दाँतों को स्वस्थ, सफेद व मजबूत रखता है। दाँतों के दर्द, मसूड़ों से होनेवाले रक्तस्राव, मुँह की दुर्गंध व मैल को दूर करता है।

(सभी संत श्री आशारामजी आश्रमों व समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध।)

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

नीचे दिये गये रिक्त स्थानों की पूर्ति करने के लिए इस अंक को ध्यानपूर्वक पढ़िये। उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

(१) ..... को बिना तेल-घी का भोजन करना चाहिए।

(२) ...... की लीलाओं को मानुषी बुद्धि से तौलना असम्भव है।

(३) आप अपने ...... के प्रति सदा जागृत रहें।

(४) जिन्हें ...... मिले हैं वे परम स्वतंत्रता का राजमार्ग पा चुके हैं, उन्हें बधाई हो !

(५) बिना .... के भौतिक उन्नति आतिशबाजी के अनार जैसी है।

पिछले अंक की 'ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी' के उत्तर

(१) गुरु (२) संस्कृत भाषा (३) दृढ़ता (४) भगवद्गीता (५) विषयासक्ति

****

चिकित्सा जगत को भारत की अनमोल देन : एक्यूप्रेशर चिकित्सा

एक्यूप्रेशर भारतवर्ष के ऋषि-मुनियों द्वारा खोजी गयी एक सरल, निर्दोष, स्वावलम्बी एवं अहिंसक वैज्ञानिक चिकित्सा-पद्धति है । यह शरीर के प्रतिबिम्ब केन्द्रों पर दबाव द्वारा रोगों का उपचार करने की प्रभावशाली और अत्यंत उपयोगी चिकित्सा-पद्धति है । इसको कोई भी व्यक्ति आसानी से सीखकर घर बैठे स्वयं एवं दूसरों का उपचार सुगमता से, बिना किसी दुष्प्रभाव के कर सकता है। इसके द्वारा रोग का निदान, उपचार और रोगों की रोकथाम - तीनों एक साथ सहजता से कर सकते हैं।

समय के साथ-साथ इस पद्धति में नये-नये उपकरण शामिल हुए हैं, जो आज बाजार में आसानी से उपलब्ध हैं । थोड़ी सावधानीपूर्वक उनका भी उपयोग किया जा सकता है।

कान के रोगों का उपचार

कान के विभिन्न प्रकार के रोग, जैसे - दर्द, कम सुनाई देना, बहरापन, कानों में साँय-साँय की आवाज आना आदि का इलाज निम्न चित्रानुसार दर्शाये गये हाथ-पैरों के मुख्य एवं सहायक प्रतिबिम्ब केन्द्रों पर दबाव देकर कर सकते हैं।

मुख्य दबाव बिंदु : ये बिंदु दोनों पैरों तथा दोनों हाथों में चौथी एवं पाँचवीं उँगलियों के उस भाग में होते हैं, जहाँ उँगलियाँ क्रमशः तलवों तथा हथेलियों से मिलती हैं। (देखें चित्र क्र. १, २, ३, ४)
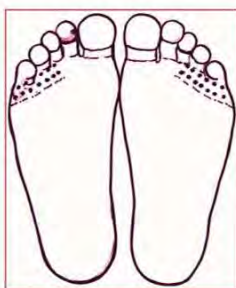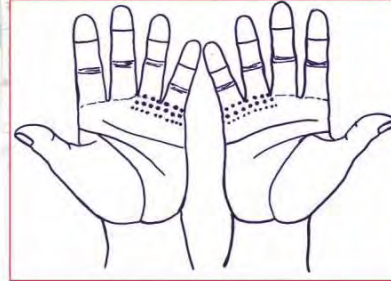
चित्र क्र. १

चित्र क्र. २

चित्र क्र. ३

चित्र क्र. ४

चित्र क्र. ५

सहायक दबाव बिंदु : ✻ ये केन्द्र दोनों कानों के मध्यभाग के समीप तथा कानों के निचले भाग पर होते हैं। (देखें चित्र क्र. ५)

✻ कानों के बिल्कुल पीछे नीचे के भाग में जहाँ थोड़ा गड्ढा-सा होता है, वहाँ हाथ के अँगूठे से कुछ सेकंड तक दबाव देना चाहिए । बहरापन दूर करने में यह विशेष लाभदायी होता है।

(देखें चित्र क्र. ६)

चित्र क्र. ६

ध्यान दें : कान की समय-समय पर अंदर से सावधानीपूर्वक सफाई की जाय तो आगे होनेवाले रोगों से बचाव हो सकता है। स्वस्थ कानों में गुनगुने सरसों के तेल की २-३ बूँदें कुछ दिनों के अंतराल पर डालते रहने से बहुत-सी बीमारियों से बचाव हो जाता है।

जनहितकारी सेवाकार्यों की अखंड धारा...

अहमदाबाद आश्रम में उत्तरायण पर हुए विभिन्न कार्यक्रम

उत्तरायण पर्व पर अहमदाबाद आश्रम में १४ जनवरी को श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं युवा सेवा संघों का वार्षिक सम्मेलन हुआ । १५ जनवरी को पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई हेतु सामूहिक यज्ञ व आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ हुआ । इसी दिन ऋषि प्रसाद का राष्ट्रीय वार्षिक सम्मेलन हुआ, जिसमें देशभर से आये इस सेवा में संलग्न पुण्यात्माओं ने भाग लिया तथा विभिन्न स्थानों से पधारे संतों ने ऋषि प्रसाद की महिमा के बारे में लोगों को अवगत कराया । इस कार्यक्रम में ऋषि प्रसाद नाटिका की सुंदर प्रस्तुति की गयी । इस पावन अवसर पर संतों द्वारा तीन पुस्तकों का विमोचन हुआ - (१) सेवा संजीवनी एवं ऋषि प्रसाद सेवा मार्गदर्शिका (२) दिव्य शिशु संस्कार (३) कानून परिवर्तन कब ?

१६ जनवरी को 'महिला उत्थान मंडल' द्वारा 'दिव्य शिशु संस्कार सम्मेलन' आयोजित हुआ । इसमें पूज्य बापूजी के सत्संग तथा विशेषज्ञ साधक चिकित्सकों व मनोवैज्ञानिकों के वक्तव्यों द्वारा 'दिव्य शिशु संस्कार' पर मार्गदर्शन दिया गया ।

इन कार्यक्रमों में सभी साधकों को पूज्य बापूजी के सान्निध्य में होनेवाले उत्तरायण ध्यान-योग शिविर की याद आ रही थी । उनके हृदय में रह-रहकर यही करुण पुकार उठ रही थी कि 'बापूजी ! अब तो आ जाओ ।'

गरीबों में कम्बल-वितरण व भंडारे

सर्दियों में गरीब-आदिवासी व असहाय लोगों में हर वर्ष कम्बल-वितरण अभियान चलाया जाता है। इस अभियान के अंतर्गत अयोध्या, गोरखपुर, सुल्तानपुर (उ.प्र.), भुसावल, बोईसर (महा.), भावनगर, छारिया, सरकी लीमडी (गुज.), कोलकाता में कम्बल-वितरण व भंडारा किया गया। रायपुर (छ.ग.), निवाई (राज.), धारवाड़ (कर्नाटक) तथा मोदीनगर (उ.प्र.) में कम्बल बाँटे गये। गोधरा (गुज.) में अनाज-वितरण तथा अमृतसर (पंजाब), इगलास (उ.प्र.), पंचेड़, सुसनेर, पेटलावद (म.प्र.), भावनगर (गुज.) में भंडारा हुआ।

ग्वालियर आश्रम द्वारा आदिवासी गाँव इमलिया तथा मुढ़ खेड़ा में कम्बल, टोपी, खजूर, 'नशे से सावधान' पुस्तक, सुप्रचार साहित्य आदि का वितरण कर भगवन्नाम-कीर्तन कराया गया। लुधियाना (पंजाब) में कीर्तनयात्रा तथा लंगर का आयोजन हुआ।

कोलकाता में गंगासागर तीर्थयात्रियों के लिए पिछले १८ वर्षों से चलायी जा रही सेवा के अंतर्गत इस वर्ष भी विशेष सेवा शिविर का आयोजन किया गया।

युवा सेवा संघ ने मनाया 'युवा दिवस'

भोपाल, मंडीदीप (म.प्र.), सूरत (गुज.), जम्मू, अहमदाबाद, आगरा, बेंगलुरु आदि में युवा दिवस पर 'युवा सेवा शिविर' का आयोजन हुआ। सायन-मुंबई में रैली निकाली गयी। मैनपुरी (उ.प्र.) में गरीबों में वस्त्र-वितरण हुआ।

कीर्तन यात्राओं से राष्ट्र-जागृति

कड़ाके की ठंड में भी पूज्य बापूजी के साधक प्रभातफेरियों के द्वारा भगवन्नाम-कीर्तन करते हुए अपने-अपने गली-मुहल्लों में आध्यात्मिक तरंगें फैला रहे हैं। इंदौर, देवास, सागर (म.प्र.), भिलाई (छ.ग.), सिरसा, रेवाड़ी (हरि.), रुद्रपुर (उत्तराखंड) में प्रभातफेरियाँ निकाली गयीं व सुप्रचार साहित्य का वितरण किया गया। कोलकाता, कानपुर, बीरगाँव जि. रायपुर, नंदिनीनगर (छ.ग.), वृंदावन (उ.प्र.), मांडवी जि. सूरत (गुज.) में संकीर्तन यात्रा तथा दुनावा, मुलताई (म.प्र.), लुधियाना, राजपुरा, दीनानगर जि. गुरदासपुर (पंजाब), बाड़मेर (राज.) में राष्ट्र जागृति यात्राएँ निकाली गयीं। बड़ौदा के मकरपुरा, वासणा, छाणी, भायली, वाघोडिया रोड, समा, दीवालीपुरा व मांजलपुर आदि स्थानों पर सुप्रचार यात्राएँ निकाली गयीं, जिनमें 'सत्यमेव जयते', 'लोक कल्याण सेतु', 'ऋषि प्रसाद' तथा मातृ-पितृ पूजन के पर्चे बाँटे गये। गाजियाबाद में सुप्रचार यात्रा ५०१ दिनों तथा भुवनेश्वर में ३०५ दिनों से सतत चल रही है।

व्यसनमुक्ति अभियान

इस अभियान के अंतर्गत तलोदा जि. नंदुरबार (महा.), बिलासपुर (छ.ग.) तथा कानपुर, लखनऊ (उ.प्र.) में व्यसनमुक्ति रैलियाँ निकाली गयीं व सत्साहित्य बाँटा गया ।

विद्यार्थी-उत्थान के कार्यक्रम

'योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रम' के अंतर्गत बेंगलुरु (कर्नाटक), फिरोजपुर (पंजाब), करावलनगर-दिल्ली, तरसाली, वड़दला जि. बड़ौदा (गुज.) के विद्यालयों में कार्यक्रम हुए ।

मालेगाँव (महा.) के अनेक विद्यालयों में हुए 'सहज स्वास्थ्य व योग प्रशिक्षण कार्यक्रमों' में हजारों विद्यार्थियों एवं सैकड़ों शिक्षकों ने लाभ लिया तथा हर सप्ताह ऐसे कार्यक्रम करने की माँग की । बाड़मेर (राज.) में भी इस कार्यक्रम का आयोजन हुआ । मांजलपुर, फतेपुरा, गाजरा वाड़ी जि. बड़ौदा (गुज.) के विद्यालयों में मातृ-पितृ पूजन दिवस तथा योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रम हुए । भुवनेश्वर, ब्रह्मपुर (ओड़िशा) में विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविर का आयोजन हुआ । बड़ौदा, कटक (ओड़िशा), पाली, उदयपुर (राज.), सहारनपुर, गोरखपुर (उ.प्र.) में 'ज्योत से ज्योत जगाओ सम्मेलन' आयोजित हुए ।

गुरुकुल के विद्यार्थियों ने किया कमाल !

गांधीनगर (गुज.) में गुजरात सरकार द्वारा आयोजित ६६वें गणतंत्र दिवस समारोह में संत श्री आशारामजी गुरुकुल, अहमदाबाद के विद्यार्थियों को सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ । गुजरात के कानून राज्यमंत्री श्री प्रदीपसिंह जड़ेजा ने विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किया । गुरुकुल के १२५ विद्यार्थियों ने यहाँ ५ प्रकार के ९ मंजिला मानव पिरामिडों की प्रस्तुतियाँ कीं, जिन्हें हजारों दर्शकों ने खूब सराहा । (देखें मुखपृष्ठ ४)

अन्य सेवाकार्य

महिला उत्थान मंडल द्वारा पटना (बिहार), पठानकोट (पंजाब) में संस्कार सभा तथा बड़ौदा (गुज.) में 'महिला सर्वांगीण विकास शिविर' का आयोजन हुआ ।

बाड़मेर (राज.) में 'योग साधना प्रशिक्षण शिविर' का निःशुल्क आयोजन किया गया ।

(इस लेख पर पाठकगण अपना सुझाव भेज सकते हैं । पता पृष्ठ ३ पर देखें ।)

संस्कृतप्रेमी राजा भोज

प्राचीनकाल में उज्जैन से थोड़ा दूर, धारा नगरी (वर्तमान धार, म.प्र.) राजा भोज की राजधानी थी। राजा का संस्कृत भाषा के प्रति प्रेम इतिहास-प्रसिद्ध है। वे चाहते थे कि उनके राज्य में रहनेवाले साधारण जन भी संस्कृत पढ़ें और दैनिक जीवन में उसका प्रयोग करें। एक समय भोज ने यह घोषणा करा दी कि यदि कोई संस्कृत नहीं जानता हो, मूर्ख हो तो वह उनके राज्य में नहीं रह सकता फिर चाहे वह ब्राह्मण ही क्यों न हो और यदि कोई संस्कृत जानता है, विद्वान है तो वह उनके राज्य में सम्मानपूर्वक रहने का अधिकारी है फिर चाहे वह कुम्हार ही क्यों न हो :

विप्रोऽपि यो भवेत् मूर्खः स पुराद् बहिरस्तु मे ।
कुम्भकारोऽपि यो विद्वान् स तिष्ठतु पुरे मम ॥

अब राजकर्मचारी घर-घर जाकर छानबीन करने लगे कि कौन संस्कृत जानता है और कौन नहीं । उन्होंने एक जुलाहे को यह मानकर पकड़ लिया कि यह तो संस्कृत नहीं जानता होगा और उसे राजा के सामने ले जाकर खड़ा कर दिया ।

राजा भोज ने उससे पूछा : ''क्या तुम संस्कृत जानते हो ?''

जुलाहे ने संस्कृत में उत्तर दिया और कहाः ''कवयामि वयामि यामि राजन् !'' अर्थात् मैं कविता रचता हूँ, कपड़े बुनने का काम भी करता हूँ और आपकी अनुमति से घर जाना चाहता हूँ।

जुलाहे के संस्कृत वचन और काव्य-कौशल से राजा भोज बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे पुरस्कार देकर सम्मानित किया । इससे राजकर्मचारी अपने किये पर लज्जित हो राजा से क्षमा माँगने लगे ।

राजा भोज संस्कृत और संस्कृति के कितने हिमायती और प्रजावत्सल रहे होंगे कि मेरे राज्य में कोई अविद्वान न रहे, असंस्कृत न रहे ! और यही कारण था कि उनकी प्रजा स्वाभिमानी, आत्मविश्वासी और साक्षर होने के साथ-साथ ऊँची समझ से सम्पन्न थी ।

एक बार राजा भोज सर्दी के दिनों में सायंकाल नदी के किनारे टहल रहे थे । सामने से नदी को पार करता हुआ एक व्यक्ति सिर पर लकड़ियों का गट्ठर रखकर आ रहा था । उसे देख राजा के मन में यह जानने की उत्कंठा हुई कि 'क्या इस युवक को भी संस्कृत आती है ?'

उन्होंने पूछा : ''शीतं किं बाधति विप्र ?'' अर्थात् कहीं तुम्हें ठंड तो नहीं सता रही है ?

युवक ने गम्भीरतापूर्ण उत्तर दिया : ''शीतं न तथा बाधते राजन् ! यथा 'बाधति' बाधते ।''

अर्थात् हे राजन् ! मुझे ठंड तो उतना नहीं सता रही है जितना आप द्वारा 'बाधते' की अपेक्षा प्रयुक्त किया गया गलत शब्द 'बाधति' सता रहा है ।

दरअसल, संस्कृत में 'बाध्' धातु आत्मनेपद की है । उसका शुद्ध रूप 'बाधते' है, 'बाधति' प्रयोग अशुद्ध है ।

राजा ने अपनी गलती स्वीकार की । लकड़हारे की स्पष्टवादिता और संस्कृत-ज्ञान से प्रसन्न होकर राजदरबार में बुला के सम्मानित किया और यथेष्ट धनराशि देकर विदा किया अपनी गलती बतानेवाले उस लकड़हारे को !

संस्कृत भाषा भारतवर्ष के वैदिक ज्ञान, अध्यात्म ज्ञान का मेरुदंड है । **(पृष्ठ ४१ पर)**

"मेरा सूरज कभी डूबा ही नहीं"

उत्तरायण पर पत्रकारों से बातचीत के दौरान पूज्य बापूजी ने देशवासियों को उत्तरायण की बधाई देते हुए कहा : "उत्तरायण की सबको शुभकामना है, बधाई हो ! आज से सूर्य उत्तर की ओर चलेगा। अंधकार कम और उजाला ज्यादा होता जायेगा । सुख-दुःख सपना है, परमात्मा अपना है । आज उत्तरायण है । ईश्वर के नजदीक तेजी से जायेंगे । यह संदेशा पहुँचायेंगे मीडियावाले प्यारे ।"

पत्रकार : "आपका सूरज कब उगेगा ?"

पूज्य बापूजी : "मेरा सूरज कभी डूबा ही नहीं, रोज ही उगा है । मैं हर हाल में मस्त हूँ । जितनी मुसीबतें आती हैं, उतना मजबूत होकर निकलता हूँ और मुझे न्यायपालिका पर ऐसा भारी भरोसा है कि आज तक के सारे आरोपों की पोल खोल दी हमारी न्यायपालिका ने ! हमें हमारे देश की न्यायपालिका पर गर्व है।"

पत्रकार : "आपका स्वास्थ्य कैसा है ?"

पूज्य बापूजी : "'स्वास्थ्य बुरा है, बुरा है' बोलूँ तो बुरा हो जायेगा। कैसा भी है, भला है। कैसा भी है, बढ़िया है।

पूरे हैं वे मर्द जो हर हाल में खुश हैं।"

पत्रकार : "बापूजी ! अशोकजी सिंहल आपसे मुलाकात करने आये थे..."

पूज्यश्री : "अशोक सिंहलजी इस बड़ी उम्र में भी आये मिलने को, अभी भी सज्जनता की कद्र है सज्जन लोगों को।"

पत्रकार : "अशोक सिंहल आपसे मिले, आप बड़े खुश नजर आ रहे हैं ?"

पूज्य बापूजी : "यह तो आपकी कल्पना है - 'बड़े खुश', 'छोटे खुश'...।"

२० जनवरी को दिया गया संदेश

पूज्यश्री : "भक्त आनंद में रहें। आत्मा अमर है, संसार सपना है और परमात्मा अपना है। कई ऐसे मीडियावाले तो देवता हैं जो सत्संग की बातें पहुँचाते हैं। बात की तोड़-मरोड़ नहीं करते तो मुझे तो बहुत प्यारे लगते हैं। उन्हें धन्यवाद है।"

****

(पृष्ठ ४० 'राज भोज का शेष') हमारी भारतीय संस्कृति की आधारशिला है। आज विदेश के विद्यालयों-विश्वविद्यालयों में भी संस्कृत पढ़ायी जा रही है। अपने ही देश में लम्बे समय से तिरस्कृत रही संस्कृत के लिए अब पुनः सम्मानित होने का समय आ गया है। अब देशवासियों को, समझदार सज्जनों को इसे विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में अनिवार्य करने की माँग करनी चाहिए।

चहुँओर सुनाई देने लगी है मातृ-पितृ पूजन की गूँज, कार्यक्रमों की एक झलक

देश के विभिन्न विद्यालयों में चलाये जा रहे योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रम

मध्य प्रदेश में चल रही राष्ट्र जागृति यात्राओं की कुछ झलकें

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

राष्ट्रीय ऋषि प्रसाद सम्मेलन, अहमदाबाद   ऋषि प्रसाद सम्मेलन, लखनऊ

RNP. No. GAMC 1132/2015-17
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2017)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/15-17
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2017)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2015-17
WPP LIC No. U (C)-232/2015-17
MNW-57/2015-17
'D' No. MR/TECH/47.6/2015
Date of Publication: 1st Feb 2015

उत्तरायण के अवसर पर अहमदाबाद में 'राष्ट्रीय ऋषि प्रसाद सम्मेलन', 'श्री योग वेदांत सेवा समिति सम्मेलन' तथा महिला उत्थान मंडल द्वारा 'दिव्य शिशु संस्कार सम्मेलन' सम्पन्न हुए।

Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month. * Posting at ND PSO on 10th & 11th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 24th & 25th of E.M.

संत श्री आशारामजी गुरुकुल, अहमदाबाद के विद्यार्थियों ने किया कमाल !

अहमदाबाद गुरुकुल के विद्यार्थियों का अद्भुत प्रदर्शन !... ठहर गयी दर्शकों की नजरें !
गांधीनगर में 'गुजरात सरकार' द्वारा आयोजित ६६वें गणतंत्र दिवस समारोह में पाया प्रथम पुरस्कार।

गरीबों में कम्बल, वस्त्र, राशन आदि जीवनोपयोगी वस्तुओं का वितरण करते साधक